શ્રી યશોવિજયજી
જૈન ગ્રંથમાળા
દાદાસાહેબ, ભાવનગર.
ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨
૩૦૦૪૮૪૬
2194

યાત્રા

જૈન તિર્થ

વર્ણન

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्री

केशरियाजी जै

गुरुकुल ा के संग्रह करने की

भाग्यवश वह भावना

ा प्रार्थना, स्त न की माधुरी, भावपूर्ण

स्तोत्रों का को प्रफुल्लित व आनंदित

बज उठते हैं। प्रार्थना

में मस्त होकर अपने आप

ा एक दिव्य आनन्द का अनु-

संयोजक ग्ध हो जाता है।

फतहचन्द्र सिनेमा के विषैले वातावरण में कोमल

ुरु, राज ुवकों का यदि कोई रक्षक हो सकता

सुगरि रास्ते पर लगा सकता है, तो वह

केशरियाज वातावरण ही है।

ी जैन धर्मस्त संसार शांति चाहता है परन्तु अन्वे

ंसक शस्त्रों का, बमों का हो रहा है। यह

वीर संवत् २४७६ वेरुद्धता है जो आत्मशांति चर्म तीर्थंकर श्री

चैत्र सुद १३ ने दुनिया के सामने रक्खी जिसे महात्म

शुक्रवार ी प्रदर्शित की तथा हमारे राष्ट्र पिता म ने

जिसका मार्ग बताया वह शांति दिन प्र समाज

त बनती जा रही है। सभ्य कहलाते

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ ॐ अर्हम् ॥

नेतारम् ज्ञातारं विश्व वस्तुतः ।
रामीशं तीर्थेशं प्रणमाम्यहम् ॥

समर्पण

जि स
य भूमि
ा प्रताप
र व दानी
धर्मवीर को
त्र भूमि मेवाड
क व मृतप्रायः
को पुनः नव
ारण के लिये
स्थापना कर
कार्य किया
वस्पति
जी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दो शब्द

प्रार्थना, स्तवन, संवाद आदि के संग्रह करने की भावना मेरी कभी की थी। सौभाग्यवश वह भावना आज पूर्ण हुई। प्रार्थना व स्तवन की माधुरी, भावपूर्ण ध्वनि, संगीत की लय आत्मा को प्रफुल्लित व आनंदित करती है। हृद्तन्त्री के तार बज उठते हैं। प्रार्थना कहने व सुनने वाले भक्ति में मस्त होकर अपने आप को भूल जाते हैं। आत्मा एक दिव्य आनन्द का अनुभव करती है। मन मुग्ध हो जाता है।

इस दोषपूर्ण सिनेमा के विषैले वातावरण में कोमल हृदय बालकों व युवकों का यदि कोई रक्षक हो सकता है, उनको सच्चे रास्ते पर लगा सकता है, तो वह प्रार्थना का पवित्र वातावरण ही है।

आज समस्त संसार शांति चाहता है परन्तु अन्वेषण तो विध्वंसक शस्त्रों का, बमों का हो रहा है। यह पारस्परिक विरुद्धता है जो आत्मशांति चर्म तीर्थंकर श्री प्रभु महावीर ने दुनिया के सामने रक्खी जिसे महात्म बुद्ध ने भी प्रदर्शित की तथा हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी ने जिसका मार्ग बताया वह शांति दिन प्रति समाज अशांति बनती जा रही है। सभ्य कहलाने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वर्ग धर्म व ईश्वर को ढोंग मानता है उसकी अवहेलना करता है । तब प्रार्थना को दिनचर्या में स्थान कैसे मिले। प्रार्थना में वह शक्ति है कि पापी भी महान आत्मा बन जाता है । ईश्वरत्व को प्राप्त कर लेता है । मानव की दानवता दूर हो जाती है । आज जो मनुष्य पशुता से भी बढ कर मनोवृत्ति को अपनाये हुए है और एक दूसरे की घात करने को तैयार है उनकी उद्विग्न आत्मा को शांति देने की शक्ति केवल प्रार्थना में ही है । प्रार्थना में बडा बल है । गांधीजी ने गोलमेज कांफ्रेन्स लन्दन से आकर कहा था कि "प्रार्थना मेरे जीवन की रक्षिका रही है । इसके बिना मैं बहुत पहिले ही पागल होगया होता ।" ज्यों २ प्रार्थना में अनुराग बढेगा त्यों २ निर्भयता आती जायगी । आत्मशुद्धि के मार्ग पर आरुढ व्यक्ति को मृत्यु मित्र समान तथा धन, क्षणिक और नाशवान प्रतीत होता है । विद्यार्थी अवस्था में ही यदि प्रार्थना की आदत डाल दी जाय तो वह जीवन भर बनी रहेगी । उत्तम तो यह है कि घर घर में प्रार्थना हो, सुबह व शाम कुटुम्ब के सब लोग मिल कर प्रार्थना करें जिसके शुभ संस्कार भावी सन्तान पर पडे ।

इस संग्रह में मैंने विशाल दृष्टि से काम लिया राष्ट्रीय प्रार्थना व गजलों को धार्मिक स्तवनों से र दिया हैं । साथ ही पीछे की तरफ कुछ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संवाद दिये हैं जो मनोरंजक होते हुए शिक्षाप्रद भी हैं। मेरे नित्य के स्मरण पाठ को भी छपवाया है जिस से विद्यार्थी लाभ उठा सकें। चित्तौड स्टेशन पर बनाई गई जैन धर्मशाला में कुछ चुने हुए श्लोक दोहे व नीति के वचन मैंने लिखवाये हैं जो यात्रियों को बहुत पसन्द आये और उनको वे उतार कर ले गये हैं अतः यात्रियों की इस कठिनाई को दूर करने के लिये सब श्लोक आदि को भी इस पुस्तक में स्थान दिया है।

मेरे जीवन के निर्माता परमोपकारी पंजाब केशरी श्री मद्विजय वल्लभसूरीश्वरजी महाराज को मैं कदापि नहीं भूल सकता जिनके करकमलों द्वारा स्थापित आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरांवाला पंजाब ने हम चारों भाइयों के (श्री दीपचन्दजी, फतहचन्द, श्री हुकमचन्दजी, धर्मचन्दजी) हृदय में ज्ञान की ज्योति जगाई है। जो कुछ भी करने की क्षमता हम में है वह उन्हीं गुरुदेव का प्रताप व ज्ञानदात्री गुरुकुल जननी की देन है।

जिन २ पुस्तकों से मुझे सहायता मिली है उनके संयोजकों का आभार मानता हूं। विशेषकर गांधीजी की आश्रम भजनावली तथा बाबू बंसीधरजी की वीर गीतांजली का आभारी हूं।

मेरे इस सर्व प्रथम प्रयास में इस संस्था के विद्वान व होनहार विद्यार्थियों ने पूरा हाथ बटाया है तथा समाज

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

काल समीप होते हुए भी इस कार्य के लिये परिश्रम किया है इनमें विद्यार्थी नजरसिंह, भूपेन्द्रसिंह, बसन्तीलाल व महेन्द्रकुमार तथा विजयसिंह का कार्य प्रशंसनीय है। जिनने कई नए भजन व संवाद संग्रह करने में व लिखने में सहायता दी। जितना अधिक आप इस पुस्तक से लाभ उठायेंगे उतनाही मैं अपना परिश्रम सफल मानूंगा। आपको सच्चे आनन्द की प्राप्ति में यह भजनावली सहायक हो। यही भावना है। ॐ शांति शांति शांति।

श्रीकेशरियाजी जैन गुरुकुल,
चित्तौडगढ (राजस्थान)
२७ फरवरी १९५०

विनीत—
फतहचन्द श्रीलालजी महात्मा
देलवाडा

-: आभार प्रदर्शन :-

निम्न लिखित महानुभावों ने इस पुस्तक प्रकाशन में सहायता देकर उदारता दिखाई है उनका मैं पूर्ण आभारी हूं।

२१) श्रीमान् कस्तूरचन्दजी भंवरलालजी निम्बाहेडा

२१) श्रीमान् तेजमलजी कोठारी रामपुरा

२१) श्रीमान् लालचन्दजी कपूरचन्दजी चारभुजारोड

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संग्राहक की जाति

महात्मा जाति का संक्षिप्त इतिहास

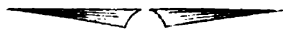

जैन धर्म के दो मार्ग हैं एक प्रवृत्ति दूसरा निवृत्ति। प्रवृत्ति या गृहस्थाश्रम का उपदेश देकर उनको संस्कारों द्वारा निवृत्ति के लिये तैयार कराने वाले गृहस्थ गुरु या कुलगुरु कहलाते हैं। उपनयन आदि संस्कारों से वैराग्य की ओर झुकी हुई आत्मा को भगवती दीक्षा देकर मोक्ष मार्ग में लगाने वाले निवृत्ति गुरू पञ्चमहाव्रतधारी मुनिराज आचार्य महाराज होते हैं।

कुलगुरु या शिक्षागुरु गृहस्थावस्था में विद्या का उत्तम अध्ययन करा कर जीवन को सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करते हैं अतः उनकी जिम्मेवारी बहुत होती है। बाल्य काल में शिक्षा व संस्कार अपूर्ण होने से दीक्षा के बाद आत्मा उछृंखल होजाने का भय बना रहता है एवं परिणामतः कुसम्प व वितण्डावाद बढता है।

इस वक्त उन शिक्षागुरु या कुलगुरुओं की मान्यता कम हो गई, बाल्यावस्था में धार्मिक संस्कार उन्नत न होने से निवृत्ति मार्ग में लगे हुए आत्माओं का जीवन समाज

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

व धर्म के लिए होना चाहिये जितना उपयोगी नहीं है। उनमें द्वेष फैला हुआ है। आत्मारामजी कृत जैन तत्त्वादर्श पृष्ठ ५०८ पर लिखा है तथा तत्वनिर्णय प्रासाद में भी वर्णन है :—

अवसर्पिणी के प्रथम आरे में भगवान ऋषभदेवजी के विवाहोत्सव की विधि कराने के लिये त्रायत्रिंशकदेव आये थे उसवक्त भगवान संसार को सभी प्रकार की शिक्षा देने में लगे हुए थे और अलग अलग कार्य सबको सिखा रहे थे। अतः गृहस्थ के उपयोगी शिक्षा पठनपाठन तथा विधि विधान के लिये उन देवों की शिष्य रूप एक जाति नियुक्त की उनके कार्य श्रावकों से उत्तम होने और धर्म में प्रवृत्त रहने से उन्हें वृहद श्रावक (वृद्ध सावय) तरीके से माना गया।

पश्चात् भगवान ने व उनके पुत्रों ने दीक्षा ली तब एक बार भरत राजा ने भक्ति से परिपूर्ण हो कर ५०० गाडे पक्वान्न के ले कर प्रभु के पास अन्न ग्रहण की विनती की। प्रभु ने उसे समझाया कि यह राजपिन्ड साधुओं को नहीं कलपता। अतः इन्द्र ने भरत से कहा कि इस अन्न को तुम से उत्तम ऐसे वृहद श्रावकों को ग्रहण कराओ। भरत ने वैसे ही किया और उन से प्रार्थना की कि आप हमेशा मेरे यहां ही भोजन करें व मुझे धर्म उपदेश देते रहें वे सदा यह मन्त्र बोलते थे 'जितो-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भेवानवर्द्धते भयं, तस्मात् माहन माहनेति ।' अर्थात् हे राजन् तुम (राग द्वेष द्वारा) जीते गये हो, उनका भय बढ रहा है अतः आत्म गुणों को हणो न हणाओ ।' यह सुन कर के भरत राजा को वैराग्य बढता था, आत्मा विषय से हटता था । जैन वेद आगम निगम पढते पढाते थे ।

सदा "माहण माहण" का उच्चारण करने से महाण कहलाने वाले वृहत् श्रावकों की पहचान के लिये राजा ने रत्नत्रय रूप कांकिणी रत्न की तीन तार वाली जिनोपवीत धारण कराई । समय के परिवर्तन के अनुसार भरत के पुत्र सूर्ययशा ने स्वर्ण की बाद में महायशा ने चांदी की अतिबल, बलभद्र, बलवीर्य, कीर्तिवीर्य, जलवीर्य, दण्डवीर्य आदि राजाओं ने अपनी स्थिति के अनुसार परिवर्तन किया । राजाओं के पूजनीय होने से प्रजा ने भी उन्हें पूजनीय गिना व गृहस्थ गुरु की पदवी से विभूषित किया ।

नवम तीर्थंकर सुविधिनाथ भगवान के पश्चात् देशव्यापी काल पड़ा व सर्व शास्त्र व धर्मगुरुओं का विच्छेद हुआ उसवक्त महाण लोगों ने समाज की धर्म की रक्षा कर धर्म का रक्षण किया, संयमी साधुओं का विच्छेद होजाने से ये गृहस्थ गुरु उनका वेष धारण कर प्रचार करते थे अतः असंयति की पूजा का वर्णन शास्त्रों में आता है । कल्प सूत्र में इनका जगह जगह वर्णन आता है । ऋषभदत्त महाण ने देवानन्दा के स्वप्नों का फल जानने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

के लिये ज्योतिषियों को बुलाया और उन्होंने पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति कर सब स्वप्नों का फल सुनाया वे जैन धर्मावलम्बी महाणा ही थे। सिद्धार्थ राजा के घर प्रभू महावीर का जन्म हुआ तब भी ऐसा ही हुआ। सूर्य चन्द्र के दर्शन करा व माता व पुत्र को आशीर्वाद देने वाले भी वही कुलगुरु महाणा थे जिनका सत्कार राजा और राणी ने किया था।

जैन धर्मावलम्बी के घर पर संस्कार व विवाहादि शुभ कार्य कराने के लिये जैन पण्डित व ब्राह्मण की ही आवश्यकता होती है न कि वैष्णव की। कारण कि दोनों धर्मों में विरुद्धता होने से आचार विचार व मंत्र शास्त्रों में भिन्नता है। प्राचीन काल से यही रीति चली आती है। दोनों धर्मों के देव भिन्न है अतः विधि भी भिन्न है।

महाणा शब्द प्राकृत का है जिसका अर्थ ब्राह्मण होता है। पहले सभी जैन धर्म ही पालते थे परन्तु सुविधि नाथ भगवान के पश्चात् धर्मविच्छेद के बाद बहुत से राजाओं ने तथा उनके गुरु ब्राह्मणों ने धर्म परिवर्तन कर लिया था तबसे महाणा या ब्राह्मण जैन तथा वैष्णव दो प्रकार से जाने जाते थे। दिन प्रतिदिन उनकी कदु बढती जाती थी। वैष्णवों ने आडम्बर बढा कर खूब प्रचार किया। महाणा शान्त होने से अधिक खटपट न करते थे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बहुत समय पश्चात् उन लोगों ने अपने वेद भी अलग बना लिये पहले तो जैन वेद अर्थात् आगम निगम ही प्रचलित थे ।

संवत् १२२० में महाराजा कुमारपाल ने अपने उपकारी गुरु श्री हेवचन्द्राचार्यजी से प्रार्थना की कि वैदिक महाणा व जैन महाणाओं की धर्म विपरीतता व शास्त्र भिन्नता से आचार विचारों में परिवर्तन है अतः इनका उपयुक्त नया नाम नियुक्त करें जिससे पहचानने में सरलता रहे तब उन्होंने महाणा से 'महात्मा' शब्द घोषित किया । जिनका कार्य ज्योतिष, वैद्यक पढना पढाना है । साथही साथ जैन जाति के इतिहास का भार भी इन पर ही है । श्री रत्नप्रभसूरीश्वर ने ओसियानगरी में ओसवाल बना कर अलग अलग गौत्र कायम किये उन सबके लिये अलग अलग कुलगुरु मुकर्रर हुए जो आजतक चले आते हैं । महात्मा लोग आज भी अपने गृहस्थ शिष्यों का इतिहास रखते अपने पास हैं । जिसकी मान्यता सरकार भी करती है ।

पूर्व परम्परा से आज तक इस जाति में महान उपकारी राज्य सत्ताधारी राजगुरु होते आ रहे हैं । प्रथम नन्द का मन्त्री कल्पक जैन ब्राह्मण था, नवम नन्द का मन्त्री शकटाल व उसके पुत्र स्थूलिभद्र, श्रीयक व सेणा वेणा जक्खा आदि पुत्रियां जैन ब्राह्मण महाणा थीं ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चाणक्य जैन ब्राह्मण था उसने चन्द्रगुप्त को बौद्ध से जैन बनाया ।

गच्छ मत प्रबन्ध में लिखा है कि पाणीनिय, वर रुचि, कात्यायंन, व्याहडी ये जैन ब्राह्मण थे । बगभट्ट जो महांणा था उसने गवालियर के राजा आमदेव को ८वीं शताब्दी में जैन बनाया था ।

इस वक्त भी राजस्थान के राजाओं के गुरु तरीके महात्मा माने जाते हैं उनके सन्मान के लिये जागीरें प्राचीन काल से चली आती हैं ।

इस जाति को मालवा मेवाड में गुरुजी महात्मा मारवाड में गुराँसा कुलगुरु, गुजरात में गोरजी कहते हैं । ये गृहस्थ होते हैं । यति नहीं ।

उदयपुर के महाराणा व देवगढ के रावतजी तथा बडे पुरोहितों के गुरु तरीके सणडेराव वाले इन्द्रचन्द्रजी महात्मा व उनके पूर्व पुरूषों से गुरु माने जाते हैं । मारवाड में पोहकरण, निमाज, खरवा, भादराजण रायपुर आदि राजाओं के भी गुरु महात्मा ही है । उदयपुर में सिरोही में राजगुरुद्वारों के तौर पर पोशालें हैं व गुरुजी को भट्टारक कहते हैं जिनका राजसी सन्मान होता है। उदयपुर में श्री प्रताप राजेन्द्रसूरिजी भट्टारक हैं ।

मालवा में रतलाम सीतामऊ के राजगुरु निर्भय सिंहजी तेजसिंहजी हैं । झाबुआ, कणेरी, आंबासुखडा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बटमावल आदि के राज्यगुरु भी महात्मा ही हैं ।

मेवाड में कानोड, सरदारगढ, आमेट, कोठारिया देलवाडा आदि के राज्यगुरु भी महात्मा ही हैं जिनका विस्तृत हाल महात्मा वक्तावरलालजी साहब ने अपने जातीय इतिहास में लिखा है, उसमें पट्टे परवाने भी दिये हैं ।

देलवाडे में राजाओं के गुरु महात्मा बहुत ही विद्वान व राज्य के हितैषी हुए हैं । जिसकी वजह से बहुत सन्मान पाये थे । प्राचीन काल में तो इन का सन्मान था ही मगर संवत् १६४२ विक्रमी के बाद भी वैसा ही बना रहा । महाणा राघवदेवजी ने गुरु जी नरपतिजी को ११ बीघा जमीन भेंट की । महाराणा जेताजी ने महात्मा कर्मचन्दजी को ११ बीघा संवत् १७३५ में भेंट की ।

दरबार के गुरु रूप एकलिंगजी के गुंसाई प्रगासा नन्दजी ने श्री महात्मा कर्मचन्दजी को ४ बीघा जमीन १७६१ में भेंट की तथा गुंसाईजी द्वारकानन्दजी ने महात्मा डूंगाजी को १८०८ में २ बीघा जमीन भेंठ की । जिनकी पुष्टी उदयपुर के महाराना भीमसिंहजी ने महात्मा तिलोक चन्दजी देवीचन्दजी के नाम पर १८५४ में की । इस वंश में गुरुजी रतनजी महात्मा बहुत ही प्रभावशाली हुए जिनका सन्मान ७ ठिकानों के राजाओं व स्वयं उदय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुर के महराणाजी ने किया । सरदारगढ में रावत संग्रामसिंहजी ने १८३७ में सन्मान व जागीर भेंट की । देलवाडे में सं० १८७० में महाराणा कल्याणसिंहजी ने ८॥ बीघा जमीन भेंट की । इनके वंशज शिवराज जी को महाराणा फतहसिंहजी ने सं० १९२० में देलवाडे में १५ बीघा जमीन भेंट की । इनके मकान को राज पोसाल राज्यगुरुद्वारा के नाम से पुकारते हैं । जिनका सन्मान महलों के बराबर है । जहां पर देरासर हैं व जिन-प्रतिमा जी की सदा पूजन होती है । शिवराजजी के पुत्र श्री रूपलालजी थे उनके पुत्र महात्मा श्रीलालजी आज भी राज्यगुरु व राज्य ज्योतिषी का काम करते हैं जिनकी मान प्रतिष्ठा राज में, गांव में, व जाति में बनी हुई है। इनके चारों पुत्र अच्छे पढे लिखे सदाचारी धर्मात्मा हैं । श्री दीपचन्दजी चितौड के पास बरूंदनी गांव में सरकारी स्कूल में प्रधानाध्यापक वैद्य हैं । श्री फतहचन्दजी चित्तौड जैन गुरुकुल में सुप्रिन्टेन्डेन्ट व चित्तौड धर्मशाला में मैनेजर हैं इसके अतिरिक्त आप भारतीय स्वयंसेवक परिषद की स्थाई समिति के मेम्बर भी हैं । श्री जैन श्वेताम्बर कांफ्रेस फालना में आपने बहुत कुछ भाग लिया और "जैन तीर्थ व जिन मन्दिरों के प्रति सरकारी कानून" विषयक प्रस्तावों का अनुमोदन किया और महात्मा जाति का सविस्तार परिचय भी कराया । इस

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तरह आपने कई महत्वपूर्ण कार्यों में भाग लेकर जैन धर्म की महती सेवा के साथ ही साथ अपनी महात्मा जाति के गौरव को बढाया । खास कर के इस पुस्तक को प्रकाशित करवा के तो आपने धर्म और राष्ट्र की पूरी सेवा की हैं । श्री हुक्मचन्दजी कुरज कुंवारिया मेवाड में सरकारी मिडिल स्कूल में संस्कृत अध्यापक हैं । श्री धर्मचन्दजी मेट्रिक में पढते हे ।

उदयपुर में वयोवृद्ध श्रद्धेय महात्मा वक्तावरलालजी बडे ही धर्मात्मा व विद्वान् पुरुष हैं जिन्होंने महात्मा जाति का इतिहास लिखा है । उनके पुत्र श्री बसन्ती-लालजी महात्मा बडे योग्य डाक्टर हैं । वे योगाभ्यासी व दयालु पुरुष हैं । छोटे पुत्र श्री गणपतलालजी महात्मा बडे प्रतिष्ठित कार्यकुशल डाक्टर हैं । इसी प्रकार जोध-पुर में डाक्टर भँवरलालजी पीपाड वाले, श्री वृजलालजी सरदारशहर वाले मशहूर हैं तथा कलकत्ता व बीकानेर में महात्मा एन्ड कम्पनी व जवाहर केमिकल कम्पनी वाले श्री भँवरलालजी व धनराजजी प्रसिद्ध आदमी हैं। राजाजी का करेडा में लक्ष्मीलालजी महात्मा भीलवाडा में श्री भूरालालजी महात्मा व पुर में रतनलालजी हरक लालजी महात्मा, छोटीसादडी में वैद्य माधवलालजी झमक लालजी महात्मा प्रसिद्ध हैं । मन्दसौर में राजमलजी प्रसिद्ध वैद्य हैं ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महात्मा जाति की अब उन्नति हो रही है । शिक्षा व कला की वृद्धि के साथ धार्मिक भावना भी बढ रही है मालवा, मेवाड, मारवाड तथा गुजरात में महात्माओं की काफी प्रतिष्ठा है । ये लोग ज्योतिष वैद्यक व शिक्षक का का कार्य करते हैं । जहां साधु मुनिराज नहीं पहुंच पाते हैं वहाँ पर्यूषण पर्व में व्याख्यान देते हैं और धर्म में पूरी श्रद्धा रखते हैं । कितनों के घरों में घरदेरासरजी भी होते हैं । मंदिरों की संभाल व साधु महाराज की भक्ति का लाभ भी लेते हैं ।

जैन समाज का कर्तव्य है कि इस जाति को अपनावे तथा विवाह प्रतिष्ठादि कार्यों में वैष्णव ब्राह्मणों की जगह महात्माओं को ही बुलावें । ये जैन पंडित लोग श्रद्धा से व निज का धर्म जान कर दिलचस्पी से काम करते हैं । इनके बच्चों को पढाने की तरफ समाज ध्यान दे तो साधु मुनिराजों को पढाने के लिये वैष्णव पंडितों का मुंह न ताकना पडे । इस संगठन के काल में समाज पूरी एकता बढावे, अनेक मतमतान्तरों वाली जैन जाति एक होगी तभी धर्म व तीर्थों की रक्षा होगी ।

—कुन्दनमल डांगी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ
१	वन्दे मातरम्	१
२	जन गण मन अभि—	२
३	सारे जहां से अच्छा	२
४	मेरी भावना	३
५	बोल उठे जयहिन्द	६
६	नाथ मेरे चित्त में	७
७	जय जय प्यारे वीर	८
८	प्रेमी बन कर प्रेम से	९
९	अर्ज करूं जिनराज	१०
१०	ऊधो करमन की गति	१०
११	उठ जाग मुसाफिर	११
१२	इस तन धन की कौन	११
१३	निराकार है या कि	१२
१४	जिनदेव तेरे चरण में	१३
१५	प्रभु मोहे ऐसी करो	१३
१६	मंगल मंदिर खोलो	१४
१७	प्रातःकालीन प्रार्थना	१४
१८	पार्श्व प्रभू तुम हमके	१५
१९	प्रभू जय से मेरा मन	१५
२०	अब मोहे तारोगे दीन	१६
२१	निरञ्जन यार मुझे	१६
२२	आनन्द रूप भगवन	१६
१८	दरश मोहे दीजे दीन	१७
१९	जगत गुरु ऋषभदेव	१७
२५	शीतल जिन मोहे प्यारा	१८
२६	जगत गुरु तुही पर	१८
२७	चेत चित में चेत चेतन	१८
२८	मैं सादर शीश नमाता	१९
२९	हे नाथ दीनबन्धु	१९
३०	महावीर यह विनय है	२०
३१	नित हम तुम्हें	२०
३२	जयजिनेन्द्र	२१
३३	प्रभू तुम दर्शन से	२१
३४	क्या करूं ?	२२

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

३५ भावना दिन रात मेरी २२
३६ दीनबन्धो कृपासिंधो २३
३७ दुखियों के बंधु दया २३
३८ दरस पर वारि जावें २४
३९ नाम जपन क्यों छोड २४
४० हे प्रभु इस देश का २५
४१ बन्धुगणों मिल कहो २५
४२ प्राण मित्रों भले ही २६
४३ पन्द्रह अगस्त है आज २८
४४ मां के खातिर मर २९
४५ कैसे कहूं पंजाब के ३०
४६ जागो युवानो जागो ३०
४७ प्यारा हिन्दुस्तान ३१
४८ भारत माता ३२
४९ हिन्दोस्तां मेरा ३३
५० स्वागत गीत ३४
५१ ठुकरा दो या प्यार करो ३४
५२ गुरुकुल गीत ३५
५३ घट के पट ले खोल ३६
५४ जहां में कौन किसका ३७
५५ गाओ गाओ गाओ ३७
५६ भारत मेरी जन्मभूमि ३८
५७ इतिहास गा रहा है ३८
५८ ऐ हिन्द के सिपाहियों ३९
५९ वन्दे मातरम् ४०
६० वीर शिरोमणि देश ४१
६१ नाव पडी मझधार ४२
६२ प्रभु दर्शन के दोहे ४३
६३ गाले प्रभू गुणगान ४५
६४ सिधगिरी जा के ४६
६५ अब सुनो सहु संदेश ४६
६६ दिल को मिला के ४७
६७ अब तेरे सिवा ४८
६८ भक्तिभाव भज के ४८
६९ राजा राजा मोरे ४९
७० अगर जिनदेव के ५०
७१ जय महावीर ५१
७२ भगवान महावीर ५१
७३ पधारो पधारो पधारो ५२
७४ भारत माता करे पुकार ५३
७५ मोरे मन मंदिर में ५३
७६ देखो श्री पार्श्व तणी ५४
७७ जैनों बच्चों को आप ५५
७८ चालो केसरियाना देश ५६

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

७९ भवि भावे देरासर ५७
८० हे नाथ मोरी नैया ५७
८१ राजुल विवाह ५८
८२ सिद्धाचल ना वासी ६१
८३ जनारु जाय छे जीवन ६२
८४ वासुपूज्य विलासी ६३
८५ माता मरुदेवी ना नन्द ६३
८६ महावीर स्वामी हो ६४
८७ धर्म के प्रचार में ६४
८८ तेरे पूजन को भगवान ६५
८९ ध्याओ ध्याओ नाम ६६
९० जय अन्तर्यामी ६७
९१ जय जय जिनराज ६७
९२ कृपक सम्वाद ६८
९३ संवाद माता धारणी ६९
९४ विद्या संवाद ७०
९५ जुआ संवाद ७१
९६ जिनवर पूजा संवाद ७३
९७ समरो न अमरा भई ७४
९८ पेटू प्रार्थना ७५
९९ समय रो कर्तव्य ७६
१०० वह विरला संसार ७६
१०१ श्रावक जन तो तेने ७७
१०२ अब हम अमर भये ७७
१०३ कहूं कर जोर जोर ७८
१०४ एकत्व भावना ७८
१०५ नमस्कार मंत्र ७९
१०६ उवसग्गहर स्तोत्र ७९
१०७ भक्तामर स्तोत्र ७९
१०८ पार्श्वनाथ स्तोत्र ८५
१०९ जैन धर्मशाला में लिखे हुए दोहे श्लोकादि ८७
११० रत्नाकर पच्चीसी ९१
१११ अरे मन कुन में ही ९६

नोट—पुस्तक में भजन संवाद आदि एकत्रित करने में विद्यार्थी मनोहरलाल धूपिया ने जो दिलचस्पी ली है वह विशेष सराहनीय है ।

—फतहचन्द महात्मा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मंगलम् भगवान वीरो मंगलम् गौतम प्रभु ।
मंगलम् स्थूलिभद्राद्या जैन धर्मोस्तु मंगलम् ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ श्री ॥

श्री केशरियाजी जैन गुरुकुल

भजनावली

भारत वंदना

वन्दे मातरम् ।
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम् ।
शस्य श्यामलाम् मातरम् ॥ वन्दे मातरम् ॥
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनिम् ।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् ।
सुहासिनिं सुमधुर भाषिणीम् ।
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ॥ वन्दे मातरम् ॥
त्रिंशत्कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले ।
द्वित्रिंशत्कोटि भुजैधृत खर कर वाले ॥
के बोले मां तुमि अबले ।
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम् ॥
रिपुदल-वारिणीम् मातरम् ॥ वन्दे मातरम् ॥
त्वंहि विद्या त्वंहि धर्म त्वंहि हृदि त्वंहि मर्म ।
त्वंहि प्राणाः शरीरे बाहुते तुमि मां शक्ति ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हृदये तुमि मां भक्ति। तोमार मे प्रतिमा गडी मंदिरे मंदिरे।
त्वंहि दुर्गा दश प्रहरण धारिणीम् ।
कमला कमल-दल विहारिणीम् ।
वाणी विद्या दायिनीम् नमामित्वाम् ।
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम् ।
सुजलाम् सुफलाम् मातरम मातरम् । वन्दे० ॥
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम् ।
धरणीम् भरणीम् मातरम् । वन्दे मातरम् ॥

राष्ट्रीय प्रार्थना

जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता ।
पञ्जाब सिन्ध गुजरात मराठा द्राविड उत्कल बंगा ॥
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तिरंगा ।
तव शुभ नामे जागे तव शुभ आशीस मांगे ।
गाहें तव यश गाथा,
जनगण मंगल दायक जय हे भारत भाग्य विधाता ।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे भारत भाग्य विधाता ।
जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता ।

प्रार्थना

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा ।
हम बुलबुले हैं उसकी वह गुलसितां हमारा ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गुरबत में हो अगर हम रहता है दिल वतन में।
समझो हमें वहीं यह दिल हो जहां हमारा ॥
परबत वो सबसे ऊंचा हमसाया आतमा का।
वो सन्तरी हमारा वो पासवां हमारा ॥
गोदी में खेलती है जिसके हजारों नदियां।
गुलशन है जिसके दम से रश्के जीना हमारा ॥
ऐ आब रोदे गंगा वह दिन है याद मुझको।
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा ॥
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना।
हिन्दी है हम वतन हैं हिन्दोस्तां हमारा ॥
यूनान मिश्र रोमा सब मिट गये जहां में।
अब तक मगर है बाकी नामो निशा हमारा ॥
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं मिटाये।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमा हमारा ॥
'इकबाल' कोई मरहम अपना नहीं जहां में।
मालूम क्या किसी को दर्दे निशां हमारां ॥

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया ॥
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा या उनको स्वाधीन कहो।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विषयों की आशा नहीं जिनको साम्य भाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन में जो निश दिन तत्पर रहते हैं॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं '
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुख समूह को हरते हैं॥

रहे सदा सत्संग उन्हीं का ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उनही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे॥
नहीं सताऊं किसी जीव को झूठ कभी नहीं कहा करूं।
परधन बनिता पर न लुभाऊं सन्तोषामृत पिया करूं॥

अहंकार का भाव न रक्खूं नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या भाव धरूं॥
रहे भावना ऐसी मेरी सरल सत्य व्यवहार करूं।
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूं॥

मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों पर नित्य रहे।
दीन दुखी जीवों पर मेरा उर से करुणा श्रोत बहे॥
दुर्जन दुष्ट कुमार्ग रतों पर लोभ नहीं मुझको आवे॥
साम्य भाव रक्खूं मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे॥

गुणीजनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे॥
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मैं द्रोह न मेरे उर छावे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित दृष्टि न दोषों पर जावे॥

कोई बुरा कहो या अच्छा लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊं या मृत्यु आज ही आ जावे॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे ।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा कभी न पद डिगने पावे ॥

होकर सुख में मग्न न फूले दुःख में कभी न घबरावे ।
पर्वत नदी श्मशान भयानक अटवी से नहीं भय खावें ॥
रहें अडोल अकंप निरन्तर यह मन दृढतर बन जावे ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में सहनशीलता दिखलावें ॥

सुखी रहे सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे ।
वैर पाप अभिमान छोड जग नित्य नये मंगल गावे ॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की दुष्कृति दुष्कर हो जावे ।
ज्ञान चरित्र उन्नत कर अपना मनुज जन्म फल सब पावे ॥

इति भीति व्यापे नहीं जग में वृष्टि समय पर हुआ करे ।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करे ॥
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शांति से जिया करे ।
परम अहिंसा धर्म जगत में फैल सर्वहित किया करे ॥

फैले प्रेम परस्पर जग में मोह दूर पर रहा करे ।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहिं कोई मुख से कहा करे ॥
बन कर सब युगवीर हृदय से देशोन्नति रत रहा करें ।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से सब दुख संकट सहा करे ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बोल उठे जयहिन्द

बोल उठे जयहिन्द मचल गये सेनानी ।
ये हरियाला देश कभी दुनिया का ताज था ।
सुखिया थी हिन्द हिन्द वालों का राज था ॥
गोरा गुलाम आया रोटी के काज था ।
आपस में फूट डाल छीना ये ताज था ॥
कर गया बेईमानी ॥ बोल उठे···

गोरी गोरी टोली जो भारत में आई थी !
मीठी मीठी बोली बोल माया फैलाई थी ॥
सत्तावन के सन में जब जननी घबराई थी ।
लन्दन तक गौरों की टोली चकराई थी ॥
यू बोली महारानी बोल । उठे···

भारत निवासियों यह भारत तुम्हारा है ।
बोली विक्टोरिया ये लन्दन हमारा है ॥
भारत स्वाधीन करने हमने विचारा है !
आपस में प्रेम करो भारत सिरदारा है ॥
तुम्हारी रजधानी ! बोल उठे···

चौदह के सन में जब जर्मन ने वार किया ।
लन्दन के गौरों ने तुम से इकरार किया ॥
देंगे स्वराज्य ऐसा कह के तय्यार किया ।
जलिया वाले बाग बीच गोली का वार किया ।
करी खींचातानी ॥ बोल उठे···

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मौलाना मोहम्मद व शौकत ने आ के कहा ।
गांधीजी बोले क्या भारत में बाकी रहा ॥
बोले सुभाषचन्द पूरा करो अपना कहा ।
होंगे स्वतंत्र दुःख अब तो नहीं जावे सहा ॥
यही हम ने ठानी ॥ बोल उठे···

हिटलर ने वार किया छक्के छुडा दिये ।
लाखों घमंडियों के मस्तक झुकाय दिये ॥
लन्दन के गोरों ने फिर से नये वादे किये ।
देंगे स्वराज तुम्हें साथ सदा तुमने दिये ॥
न होगी बेईमानी ॥ बोल उठे···

बोले जवाहरलाल भारत के वीरों से ।
ले लिया स्वराज बिना तरकस व तीरों से ।
हमको है गर्व ऐसे भारत रणधीरों से ॥
आजाद हिन्द फौज जैसे बांके बलबीरों से ।
अमर हो गई कहानी ॥ बोल उठे···

जैन प्रार्थना

प्रार्थना

नाथ मेरे चित्त में शुभ भावना भर दीजिये ।
हे दयासागर दया कर यह मुझे वर दीजिये ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शुद्ध हूं मैं बुद्ध हूं और निर्विकारी नित्य हू ।
पाप बन्धन से प्रभो मुझको अलग कर दीजिये ॥

कर्म द्वारा कर्म की जंजीर को मैं तोड दूं ।
मोह रिपु को जीत लूं ऐसा मुझे वर दीजिये ॥

कर्तव्य के मैदान में मर २ के जीना सीख लूं ।
हो अहिंसा का धनुष और शांतिका वर दीजिये ॥

विश्व की मरुभूमि में प्यासे तडफते जीव जो ।
प्यास मैं उनकी बुझा दूं प्रेम का जल दीजिये ॥

ब्रह्मचारी बन के मैं संसार की सेवा करूं ।
द्वादशागम का हमें उपदेश हितकर दीजिये ॥

बन के गजसुकमाल सा समता से छोडूं देह मैं ।
पीके अमृत भक्तिका वह शक्ति जिनवर दीजिये ॥

वासना घुसने न पावे आत्म मंदिर में कभी ।
राम तुझमें दिल रमा दूं मोक्ष का फल दीजिये ॥

जय जय प्यारे वीर जिनेश

जय जय प्यारे वीर जिनेश ।
कामारे जग तारन हारे हो ।
मोह महा मद मारन वारे ॥
कर्म कुलाचल कुलिश जिनेश ॥
जय जय प्यारे वीर जिनेश ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करुणाकर ! करुणा कर आओ ।
धर्म फरहरा फिर फहराओ ॥
पूरण प्रेम अमी बरसाओ ।
हो जिससे स्वाधीन स्वदेश ।
जय जय प्यारे वीर जिनेश ॥

जग के सब जञ्जाल हटाओ ।
कुत्सित मग से पग हटवाओ ॥
रग रग स्वागत करती आओ ।
'इन्द्र' वन्द्य जय धर्म धुरेश ।
जय जय प्यारे वीर जिनेश ॥

प्रेमी बन कर प्रेम से ईश्वर के गुण गाया कर

प्रेमी बन कर प्रेम से जिनवर के गुण गाया कर ।
मन मंदिर में गाफिले दीपक रोज जलाया कर ॥
सोते में तो रात गुजारी दिन भर करता पाप रहा,
इसी तरह बरबाद तू बन्दे करता अपने आप रहा,
प्रातः उठ कर प्रेम से जिन मन्दिर में जाया कर ॥ १ ॥
नरतन के चोले को पाना बच्चों का कोई खेल नहीं,
जन्म जन्म के शुभ कर्मों का मिलता जब तक मेल नहीं,
नर तन पाने के लिये ऊत्तम कर्म कमाया कर ॥ २ ॥
भूखा प्यासा पंडा पडौसी तैंने रोटी खाई क्या,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दुखिया पास पडा है तेरे तैंने मौज उडाई क्या,
सब से पहिले पूछ कर भोजन फिर तू खाया कर ॥ ३ ॥
देख दया उस वीर प्रभु की जिनशास्त्रों का ज्ञान दिया,
जरा सोच ले अपने मन में कितनों का कल्याण किया,
सब कर्मों को छोड कर उस ही को तू गाया कर ॥ ४ ॥

अरज करूं जिनराज

अरज करूं जिनराज दुखियों को दुख से टारना ।
अति दुख पायो मैंने कर्मों के फन्द से, हां कर्मों के फन्द से—
इनसे वेग छुडाय यही है मेरी प्रार्थना ॥ १ ॥ अरज० ॥
लाख चौरासी में खूब रुलायो हां खूब रुलायो—
सुध बुध ही बिसराय कर्मों को जल्दी मेटना ॥ २ ॥अ०॥
तारक बिरुद तिहारो प्रभु सुन कर आयो हां सुन कर आयो—
शरण देहुं जिनराज दुखों को जल्दी मेटना ॥ ३ ॥ अरज ॥
मुझ को प्रभुजी आश तुम्हारी हां आश तुम्हारी—
शिवपुर दण्ड सोहाय यही है मेरी कामना ॥ ४ ॥ अरज ॥

ऊधो करमन की गति न्यारी

ऊधो करमन की गति न्यारी ।
सब नदिया जल भर भर रहियां सागर किस विध खारी ॥१॥
उज्ज्वल पंख दिये बगुले को कोयल किस विध कारी ॥ २ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सुन्दर नयन मृगा को दीने बन २ फिरत उजारी ॥ ३ ॥
मूरख राजा राज करत है पंडित फिरत भिखारी ॥ ४ ॥
वैश्या ओढे शाल दुशाला पतिव्रत फिरत उघाडी ॥ ५ ॥

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है।
जो सोवत है वह खोवत है जो जागत है सो पावत हैं॥
टुक नींद से अंखिया खोल जरा और जिनवर से ध्यान लगा॥
यह प्रीत करण की रीत नहीं जग जागत है तू सोवत है॥ १ ॥
नादान भुगत करणी अपनी पे पापी पाप में चैन कहां ।
जब पाप की गठडी शीश धरी तब शीश पकड क्यों रोवत है ॥२॥
जो काल करे वह आज कर ले जो आज करे वह अब कर ले।
जब चिडिया ने चुग खेत लिया फिर पछताये क्या होवत है ॥३॥

इस तन धन की कौन बडाई

इस तन धन की कौन बडाई ।
देखत नयनो से मिट्टी मिलाई ॥
अपनी खातिर महल बनाया।
आपही जाकर जंगल सोया ॥१॥
हाड जले जैसे लकडी की मोली ।
बाल जले जैसे घास की पोली ॥
कहत कबीर सुनो मेरे गुनिया ।
आप मुवै पीछे लुट गई दुनिया ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस तन धन की कौन बडाई ।
देखत नयनों से मिट्टी मिलाई ॥

प्रार्थना

निराकार है या कि साकार है ।
गुणागार या निर्गुणागार है ॥
निराधार का जो कि आधार है ।
उसे ही हमारा नमस्कार है ॥ १ ॥

सभी ज्ञान का जो कि आगार है ।
दया दान का जो कि भंडार है ॥
मिटाता सदा जो अहंकार है ।
उसे ही हमारा नमस्कार है ॥ २ ॥

नदी सिन्धु आकाश तारे बडे ।
तथा अम्न बतला रहे हैं खडे ॥
कि नीला उसी का ये विस्तार है ।
उसे ही हमारा नमस्कार है ॥ ३ ॥

सुसौंदर्य जो पुण्य का सत्व है ।
सु आनन्द जो प्रेम का तत्व है ॥
जिस का यहीं सत्य आकार है ।
उसे ही हमारा नमस्कार है ॥ ४ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जिनदेव तेरे चरण में–

जिनदेव तेरे चरण में मुझे ऐसा दृढ विश्वास हो।
विश्व समर में हे प्रभो मुझे एक तेरी आश हो॥

कर्त्तव्य पथ से जो डिगाने विघ्नगण आवे मुझे।
सन्तोष भक्ति अरु दया का मन्त्र मेरे पास हो॥ १॥

सब विश्व में ऐसी बहा दूं प्रेम की मन्दाकिनी।
दिल में तडफ हो प्रेम की अरु प्रेम जल की प्यास हो॥ २॥

निज भाव भाषा भेष का गौरव मुझे दिन रात हो।
निज देश हित ये प्राण हो और मन कभी न निराश हो॥ ३॥

संसार सागर में न भटके नाव मेरी बीच में।
मैं खुद खिवय्या बन सकू वह शक्ति मेरे पास हो॥ ४॥

मैं बालपन में ब्रह्मचारी रह सभी विद्या पढूं।
यौवन दशा में बन के श्रावक अन्त में सन्यास हो॥ ५॥

यह आत्मा ही बन सकी है नाथ खुद परमात्मा।
हे नाथ मेरी आत्मा का अन्त मोक्ष निवास हो॥ ६॥

प्रभु मोहे ऐसी करो बक्षीस

प्रभु मोहे ऐसी करो बक्षीस।
द्वार द्वार मैं भटकूं नाहिं तुम बिन किसिथ नमू ना शीश॥
प्रभु मोहे ऐसी करो बक्षीस॥ १॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शुद्ध आत्मा कला ही प्रकटे मिटे राग और रीश ॥
प्रभु मोहे ऐसी करो बक्षीस ॥ २ ॥
गुण विलास की आसा पूरो हे जगपति जगदीश ॥
प्रभू मोहे ऐसी करो बक्षीस ॥ ३ ॥

मंगल मंदिर खोलो

मंगल मंदिर खोलो । दयामय मंगल मंदिर खोलो ॥
जीवन वन अति वेगे वटाव्युं ।
द्वार ऊभो शिशु भोलो ॥
तिमिर गवुं ने ज्योति प्रकाश्यो
शिशु ने उर मां लो लो ॥
मंगल मंदिर खोलो । दयामय मंगल मंदिर खोलो ॥
नाम मधुरतम रट्यो निरन्तर,
शिशु सम प्रेमे बोलो ।
दिव्य तृषासुर आव्यो बालक,
प्रेम अमीरस ढोलो ॥
मंगल मंदिर खोलो । दयामय मंगल मंदिर खोलो ॥

प्रातःकालीन प्रार्थना

जिनराज तुम्हीं जग जीवों के जग में अतिशय हितकारी हो ।
संकट में तुम्हीं सहायक हो विघ्नों के तुम्हीं निवारक हो ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जब मोह नींद आ जाती है जब पाप घटा छा जाती है।
तुम मोक्ष मार्ग के कर्ता हो और राग द्वेष के हर्ता हो॥
तुम स्वयं भवोदधि तरता हो और भव्यजनों के तारक हो।
जब शुक्ल ध्यान की ज्योति खिली और दुई का भेद मिटा सारा॥
जब क्षायिक भाव दरस जावें तुम कर्म शत्रु संहारक हो॥
तुम अलख अगोचर अविनाशी अविकर अतिन्द्रिय अघनाशी।
तुम्हीं सर्वज्ञ ज्ञानराशि तुम शांति सुधारस सञ्चारक हो॥
जब समुद्घात द्वारा सारे ब्रह्मांड के व्यापक होते हैं।
तुम ही ब्रह्मा तुम ही विष्णु तुम ही शंकर सुखकारक हो॥
ओ नाथ तुम्हारी भक्ति के सागर में गोते खाते हैं।
वे डूबे हुए भी तिरते हैं तुम राम विश्व उद्धारक हो॥

पार्श्व प्रभु तुम हम के सिरमौर

पार्श्व प्रभु तुम हम के सिरमौर।
तू मन मोहन विदधन स्वामि साहब चन्द चकोर॥१॥
तू मुझ दिल की सुनेगा बाला तारोगे नाथ खरोर॥२॥
तू मुझ आतम आनन्ददाता ध्याता हूं कुमर किसोर॥३॥

प्रभु जय से मेरा मन राजी रहे

प्रभु जय से मेरा मन राजी रहे।
आठ पहर की चौंसठ घडियां दो घडियां जिन साजी॥ १॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दान पुण्य कुछ धर्म को करले मोह माया को त्यागी ॥ २ ॥
आनन्दघन कहे समझ समझले आखिर खोवेगा बाजी ॥ ३ ॥

अब मोहे तारोगे दीनदयाल

अब मोहे तारोगे दीन दयाल ।
आदि अनादि देव हो तुम ही तुम विष्णु गोपाल ।
शिव ब्रह्मा तुम ही हो सच्चे भाज गयो भ्रमजाल ॥
मोह विकल भूल्यो भव मांहि फिर्यो अनन्ता काल ।
'गुणविलास' श्री आदि जिनेश्वर मेरी करो प्रतिपाल ॥

निरञ्जन पार मुझे कैसे मिलेंगे

निरञ्जन पार मुझे कैसे मिलेंगे ।
दूर देखूं मैं दर या डूंगर ऊंचे घन और भूमि तले रे
धरतीपे ढूंढू तहां न पिछानूं अग्नि सहूं तो देह जले रे
आनन्दघन कहे यश सुनो वाला ऐही मिले तो मेरी
फेरो टले रे ॥

आनन्द रूप भगवन

आनन्द रूप भगवन आनन्द विश्व पावे !
प्रातः समय हृदय में यह भावना समावे ॥
कल्याण कारी होवे दुनियां को आज का दिन ।
विद्या कला व कौशल प्रतिजन बढे बढावे ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

माता के लाल सारे हो सत्य के पुजारी।
बन कर शहीद प्रतिदिन निज नाम को दिपावे॥
बन कर के साम्यवादी यह दृश्य आज देखू।
कोई न क्लेश देवे कोई न क्लेश पावे॥
उपयोगिता समय की समझ अमूल्य निधियां।
जीवन का एक क्षण भी मेरा न व्यर्थ जावे॥
आत्मा हो शुद्ध मेरी दर्पण समान मन हो।
अपनी बुराइयों की जो आप ही दिखावें॥
परतन्त्रता के दुख में जब 'राम' हम तडफते।
है नाथ तव सुबह में आनन्द मेघ छावे॥

दरश मोहे दीजे दीनदयाल

दरश मोहे दीजे दीन दयाल।
प्यास दरश की लगी है अनादि बिन दरशन न समीझे॥१॥
दया धर्म प्रभु धर्म बतायो आप यूंही वर लीजे॥२॥
भवदधि भटकत तट तक आयो अब मोरी बांह ग्रहीजे॥३॥
प्रान गान कर ध्यान धरत है अबके कदर कुछ कीजे॥४॥

जगत गुरु ऋषभदेव हितकारी

जगत गुरु ऋषभदेव हितकारी।
प्रथम तीर्थंकर प्रथम नरेश्वर प्रथम बाल ब्रह्मचारी।
देव नहीं ऐसा जो कोऊ जासे हो दिलचारी॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तुम हो साहिब मैं हूं बन्दा न्यामत देवो न बिसारी ।
श्री नय विजय विबुध सेवक के तुम हो परम उपकारी ॥

शीतल जिन मोहे प्यारा

शीतल जिन मोहे प्यारा ।

भुवन विरोचन पंकज लोचन जिऊ के जिऊ हमारा ॥ १ ॥
शीतलता गुण और कहत तुम चन्दन कहां बिचारा ॥ २ ॥
नामहि तुमरा ताप हरत है बाको घसत घसारा ॥ ३ ॥
करिहौं कष्ट जन बहुत हमारे नाम तिहारो आधारा ॥ ४ ॥
'यश' कहे जनम मरण भय भागे तुम नामे भव पारा ॥ ५ ॥

जगत गुरु तुहीं परमेश्वर ध्याऊं

जगत गुरु तुही परमेश्वर ध्याऊ ।

प्रथम तीर्थंकर प्रथम पुरुष हैं ताते चित्त न डुलाऊ ॥
सकल शास्त्र के तत्व विचारी मति निर्मल ताप लाऊं ॥
विविध स्तवन कर इन्द्र बखाने ते ही को स्तवन बनाऊं ॥

चेत चित्त में चेत चेतन

चेत चित में चेत चेतन, चौतरफ चौपट पडी ।
दुर्मति की दोस्ती ने यह दिखाई है घडी ॥ १ ॥

बाल पन की बहार में तू खेल खेले हर घडी ;
और जवानी है दीवानी अब तेरे सिर पर चढी ॥ २ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मद में तू मस्ताना बनकर कर में डालेगी कडी।
अब से तू ख्याल मन को दे प्रभु से लगा।
प्राण पार उतार तुझको धर्म की नय्या जडी॥ ३॥

मैं सादर शीश नमाता हूं

मैं सादर शीश नमाता हूं भगवान तुम्हारे चरणों में।
कुछ अपनी विनय सुनाता हूं भगवान तुम्हारे चरणों में॥
जिस २ जगती में भ्रमण करूं जो जो शरीर में ग्रहण करूं।
तह कमल भृंगवत रमण करूं भगवान तुम्हारे चरणों में॥
सुख दुःखों की चिन्ता है नहीं परिवार छूठे परवाह नहीं।
पतितों का हो कल्याण यही भगवान तुम्हारे चरणों में॥

हे नाथ दीनबन्धु !

हे नाथ दीनवन्धु हे देव दुखहारी।
होवे सदैव हम पर करुणा नजर तुम्हारी॥
सूरज सी ज्योति भरदो आत्मा उद्योत करदो।
सन्ताप ताप हर दो हे मोक्ष के विहारी॥
कर्त्तव्य हमने पाला इस दिन में पूर्ण अपना।
त्रुटियां सभी क्षमा कर सर्वेश तेजधारी॥
वह दिन हमारा भगवन बीता है श्रेष्ठ विधिसे।
यह रातभी हो भगवन दुनियाको सौख्यकारी॥
निद्रा की गोद में जब करता हो जग बसेरा।
सब रोग शोक जावे होवे न चोरी जारी॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दुःस्वप्न कोई आकर हमको न भय दिखावे।
अद्भुत हो कार्यशक्ति मनमें प्रभु की भक्ति।
प्रातः समय उठे जब इस देश के पुजारी॥

महावीर यह विनय है

महावीर यह विनय है जब प्राण तन से निकले।
प्रिय देश देश रटते यह प्राण तन से निकले॥
भारत वसुन्धरा पर सुख शांति संयुता पर।
शस्य श्याम श्यामला पर जब प्राण तन से निकले॥
देशाभिमान धरते जातीय गान करते।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले॥
भारत का चित्रपट है युग नैत्र के निकट हो।
श्री जान्हवी का तट हो तब प्राण तन से निकले॥

नित हम तुम्हें रटें भगवान

नित हम तुम्हें रटें भगवान, बनें दयालु तथा बलवान॥
मात पिता का कहना मानें,
सब को शीश नवाना जानें,
सत्य ही बोलें झूठ न भाखें
दुःख पडने पर धीरज राखें,
हम वैरी को भी न सतावें,
सदाचार से चित्त सुख पावे,
नहीं उठावें चीज पराई,
पावें नित हम शुद्ध बडाई,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जयजिनेन्द्र

जय जिनेन्द्र !

अरिहन्त रूप जग में अनूप,
गुण ज्ञान कूप सुख के स्वरूप ।
कवि कर्म केन्द्र ! जय जिनेन्द्र ॥

हे वीतराग तम के चिराग,
महिमा अदाग व्यापक विराग ।
नर के केन्द्र ! जय जिनेन्द्र ॥

भवसिन्धु पार करते विहार,
हे निराकार ! जग में अपार ।
भव उर उरेन्द्र ! जय जिनेन्द्र ॥

जीवन चरित्र उनका विचित्र,
पाते न अन्त ऐसे महन्त ।
मही में महेन्द्र ! जय जिनेन्द्र ॥

प्रभु तुम दर्शन से सुख पावें

प्रभु तुम दर्शन से सुख पावें ।
अनिमेश लोचन जग जोवत और ठोर नहीं जावे ॥
क्षीर समुद्र को पानी पीवत खारो जल नहीं भावे ॥
जन मन मोहन तू जग सोहन देवविजय गुण गावे ॥
प्रभु तुम दर्शन से सुख पावें ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

क्या करूं ?

छोड जिनवर को दुनी से दिल लगा कर क्या करूं ।
हाथ हीरा मिल गया कंकर को ले कर क्या करूं ॥
मोह अन्धी रैन में चलते ही खाई ठोकरें ।
ज्ञान दिनकर देख फिर बत्ती जला कर क्या करूं ॥
जीवन बन के ताप में जलता फिरा कई काल से ।
कल्प छाया मिल गई छत्ता लगा कर क्या करूं ॥
गा रहा हूं प्रेम से प्रभु गुण तुम्हारे सामने ।
'प्राण' जो हो प्रसन्न फिर औरों रिझा कर क्या करूं ॥

भावना दिन रात मेरी

भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो ।
सत्य संयम शील का व्यवहार घर घर बार हो ॥
धर्म का प्रचार हो और देश का उद्धार हो ।
और यह उजडा हुआ भारत चमन गुलजार हो ॥
रोशनी से ज्ञान की संसार में प्रकाश हो ।
धर्म की तलवार से हिंसा का सत्यानाश हो ॥
रोग भय अरु शोक होवे दूर सब परमात्मा ।
कर सकें कल्याण ज्योति सब जगत की आत्मा ॥
भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दीनबन्धो कृपासिन्धो–

दीनबन्धो कृपा सिन्धो कृपा बिन्दु दो प्रभो।
उस कृपा की बून्द से फिर बुद्धि ऐसी हो प्रभो॥
वृत्तियां द्रुतगामिनी हों आ समावें नाथ में।
नद नदी जैसे समाती है सभी जल नाथ में॥
जिस तरफ देखूं उधर ही दर्श हो जिनराज का।
आंख भी मूंदू तो दीखे मुखकमल जिनराज का॥
आपमें मैं आ मिलूं भगवन मुझे वरदान दो।
मिलती तरंग समुद्र में जैसे मुझे भी स्थान दो॥
छूट जावे दुख सारे क्षुद्र सीमा दूर हो।
द्वैत की दुविधा मिटे आनन्द में भरपूर हो॥
आनंद सीमा सहित हो आनन्द पूर्णानन्द हो।
आनन्द सत् आनन्द हो आनन्द चित आनन्द हो॥
आनन्द का आनन्द हो आनन्द में आनन्द हो।
आनन्द को आनन्द हो आनन्द ही आनन्द हो॥

दुखियों के बंधु दयानिधे–

दुखियों के बन्धु दयानिधे हमको बस आश तुम्हारी है।
तुम सम अब जग में कोई विभो नहीं दीनन का हितकारी है॥
प्रभु दीन दुखी कमजोरों के रक्षक बन कर सन्ताप हरो।
भवसिंधु से कर पार हमें ज्यों नाव सभी की उतारी है॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दे शक्ति हमें सुख सिन्धु प्रभु कर्त्तव्य धर्म पर डटे रहें।
पर सेवा करें उपकार करें हम सब तुम पर बलिहारी हैं ॥
जो कष्ट हमें चकचूर करें उनको जड से नाबूद करो ॥
मन मस्त करो तन खुस्त करो हम मूढ नादान अनारी हैं ॥
निज देश जाति पर कष्ट पडे बलिदान खुशी से हो जावें।
वही पौरुष हमको दे भगवन् हम तेरे दर के भिखारी हैं ॥
हम भूले हुए हैं भटक रहे कोई सच्चा मार्ग बता दो हमें।
धनधाम दो यशदो दयालु भगवन फतह ने विनती गुजारी है ॥

दरश पर वारि जावें–

दरश पर वारि जावें त्रिशला नन्दा।
सब मन्त्रों में नवकार बडो है, तारों में जिमि चन्दा ॥ १ ॥
सब धर्मों में दया धर्म बडो है, सब जल में जिमि गंगा ॥ २ ॥
यों जिनशासन देव बडो है श्री महावीर जिनन्दा ॥ ३ ॥
दरश पर वारि जावें त्रिशलानंदा ॥

नाम जपन क्यों छोड दिया···

नाम जपन क्यों छोड दिया।
क्रोध न छोडा झूठ न छोडा, सत्य वचन क्यों छोड दिया ॥ १ ॥
झूठे जगमें दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड दिया ॥२॥
कोडी को तो खूब सँभाला, लाल रतन क्यों छोड दिया ॥ ३ ॥
जिहिसुमिरन ते अति सुखपावे सो सुमिरन क्यों छोड दिया ॥४॥
खालिस इक भगवान भरोसे, तन मन धन क्यों न छोड दिया ॥५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हे प्रभु इस देश का···

हे प्रभु इस देश का सब भांति से उत्थान हो !
सभ्य देशों में हमारा मान हो सम्मान हो ॥
हम न त्यागें सत्य पथ सत मार्ग में विचरान हो ;
मातृभूमि के मान का हर वक्त हम को ध्यान हो ॥
यदि कभी मर कर हमें फिर जन्म लेना ही पडे ।
तो हमारी मातृभू यह देश हिन्दोस्तान हो ॥

बन्धुगणों मिल कहो–

बन्धुगणों मिल कहो प्रेम से, अजित सम्भव आदिनाथ ।
मुदित चित से घोष करो, पुनि पद्म अभिनन्दन सुमतिनाथ ॥
जिन्हा जीवन सफल करो कह, सुविधि चन्द्र सुपार्श्वनाथ ।
हृदय खोल बोलो मत चूको, अनन्त श्रेयांस और शीतलनाथ ॥
रक्त रुचिर वासुपूज्य मनोहर, धर्म विमल अरु शांतिनाथ ।
अनुगत कांचन रक्त वर्ण के कुन्थु अरह व मल्लिनाथ ॥
उभय श्यामतन कांचन वारे नेमि नमि मुनि सुव्रतनाथ ।
परम रक्त निष्काम शिरोमणि जय श्री विषहर पार्श्वनाथ ॥
अति उमंग से बोलो प्यारे, वर्धमान श्री अन्तिम नाथ ॥
जैन धर्म की फतह पुकारो जय श्री सिद्धाचल गिरनार ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

राष्ट्रीय गायन

प्राण मित्रों भले हीं गँवाना

प्राण मित्रों भले ही गँवाना ।
पर न झण्डा ये नीचे झुकाना ॥

तीन रंगा है झण्डा हमारा ।
बीच चरखा चमकता सितारा ॥
शान है यह इज्जत हमारी ।
सिर झुकाती इसे हिन्द सारी ॥

इस पर सब कुछ खुशी से चढाना ।
पर न झण्डा यह नीचे झुकाना ॥

ये है आजाद पन की निशानी ।
इसके पीछे है लाखों कहानी ॥
जिन्दा दिल ही है इसको उठाते ।
मर्द हैं इस पे सर तक चढाते ॥

तुम भी सारी मुसीबत उठाना ।
पर न झण्डा ये नीचे झुकाना ।

रे क्या भूले हो जलियान वाला ।
या वो डायर का इतिहास काला ॥
गोलियों की लगी जब झडी थी ।
नींव आजादी की तब पडी थी ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

याद हो गर वो खूं में नहाना ।
पर न झण्डा यह नीचे झुकाना ॥

उसने तो था न क्या जुल्म ढाया ।
पेट के बल पे हमको चलाया ॥
कोसों बच्चों को पैदल भगाया ।
माँओ बहनों को घर घर रुलाया ॥

याद हो जो तुम्हें वो फसाना ।
तो न झण्डा ये नीचे झुकाना ।

और अब भी न क्या हो रहा है ।
कौन सुख नींद में सो रहा है ॥
लाखों पाते न भर पेट खाना ।
सच बोलो तो है जेलखाना ॥

है इसी से छिड़ा यह तराना ।
होना आजाद या मिट ही जाना ॥

बस यह कर लो अहद मर मिटेंगे ।
पर न इस व्रत से तिल भर हटेंगे ॥
कुछ हो यह मुल्क आजाद होगा ।
उजड़ा गुलशन ये आबाद होगा ॥

गायेंगे आज हम सब ये गाना ।
हिन्द होगा न अब जेलखाना ॥

झण्डा यह हर किले पर चढेगा ।
इसका दल रोज दूना बढेगा ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तीरों तलवार बेकार होंगे ।
सोने वाले भी बेजार होंगे ॥
सब कहेंगे कि सर है कटाना !
पर न झगडा ये नीचे झुकाना ॥
शान्त हथियार होंगे हमारे ।
पर वे तोडेंगे अरि के दुधारे ॥
पस भला हो अंगरेज जागे ।
लोभ हिन्दी हकूमत का त्यागे ॥
वरना बदलेगा सारा जमाना ।
आखिर उनको पडेगा ही जाना ॥

पन्द्रह अगस्त है आज

पन्द्रह अगस्त है आज, सजो सब साज,
करो जलूस की तैयारी, चल पडो सकल नर नारी ॥ टेर ॥
प्रणवीरों फूट गुलामी से लबरेज भरी मटकी फोडी ।
जालिमके कडे दिल दहल पडे जेलोंकी दीवारें तोडी ॥
अब है आजादी की खुशाली, चल पडो सकल नर नारी ॥१॥

दो खोल तिजोरी धनवालों, माँ पर सुखकी बदली छाई
सैनिक निकले हैं बिगुल बजा जैनगुरुकुलकी सैना आई
छोडो सब ऊचे महल अटारी चल पडो सकल नरनारी ॥२॥

आपसके झगडे को छोडो हिलमिलकर इनपर टूट पडें
चुपचाप घुसो इनके दिलमें फिर अहिंसा बमसे फूटपडे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चली गई जुल्मी सरकार विचारी चल पडो सकल नरनारी ॥
युग के युग ऐसे बीत गये, हमको गुलाम सब कहते थे
छोडो अब दुखके गाने गाना स्वारथकी आशाको छोडो
आज हुए आजाद सभी नर नारी चलपडो सकल नर नारी ॥
मां बेटो को पति पत्नि को बहनें भैया को समझाना
मचजाये प्रलयसारी दुनियामें अहिंसाको काम नहीं लाना
रखना तुम लज्जा मांकी और हमारी चलपडो सकलनरनारी ॥
खूनी डाकू हत्यारों को मिलमिल कर समझाना है
नयवुवकों जागो राष्ट्र की सेवा लेना है
आज भाग्यसे 'फतह' हुई है हमारी चल पडो सकल नरनारी ।

मां के खातिर मर मिटने की

मां के खातिर मर मिटने की जिसने मन में ठानी ।
ओ बंग देश से चला शेर वह साफा बांध पठानी ॥
दिव्य ललाट चमकती काया, आंखों में था जादू छाया ।
ब्रह्मचर्य ही जीवन जिसका कहीं हार न मानी ॥ ओ० ॥ १ ॥
जिसका लोहा मान गये थे ब्रर्मन ओ जापानी ॥
कई आफतें आई पलट कर पर वे खूब लडे डट डट कर ॥
छुडा दिये छक्के जालिम के वह थी लक्ष्मी रानी ॥ ओ० ॥
हिटलर ने फौजी बरदी दी हिज एक्सीलेन्सी की पदवी ।
मार्शल वीर सुभाषचन्द्र को विजय मिली बलिदानी ॥ ओ० ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गांधी नहरू पल्टन बन में खां खांस लडी दुशमन से।
अमर हो गई इतिहासों में वह उनकी कुर्बानी ॥ ओ० ॥
भेद भाव कुछ नहीं जहां था केवल सैनिक धर्म वहां था।
आजादी मकसद था जिनका धन्य धन्य वे प्राणी ॥ ओ० ॥
मार्शल बोश कहां हो आओ आकर मां को धीर बंधाओ।
हिन्द हृदय सम्राट बनाओ झट दिल्ली रजधानी ॥ ओ० ॥

कसे कहूं पञ्जाब के पुरदर्द नजारे

कैसे कहूं पञ्जाब के पुरदर्द नजारे।
है खून की होली खिले गैरों के सहारे॥
लाहौर अमृतसर में बुरा हाल जो हुआ २
गलियों में फिरते थे आशीन बिचारे॥ है० ॥
पिन्डी कमलपुर में बहे खून के दरिया २
सब कामयाब हो गये जर जर के इशारे॥ है० ॥
लग गई मकानों में जो आग भी दिल में २
पल भर में जल गये महल मीनारे॥ है० ॥

जागो युवानों जागो

जागो युवानों भारत नी नारी, युग पलटाव्यो जागो।
युग पलटाव्यो ॥
कई के बालूडा अन्न बिना टलवलतां रे टलवतां रे॥
कई के रंक ना वस्त्र बिना तन सूना रे, तन सूना रे॥
राशन नो जमानो रे परमेश्वर कलयुग लाव्यो कलयुग लाव्यो।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दुरदिन आव्यो जागो दुरदिन आव्यो ।
प्राची मां बंगाल री हालत जोई के जोई के ॥
हता बंध्याँ तां हिन्दोस्तानी लेहिए अमारी रोई रे रोई रे ।
भारत जगाओ जागो दुरदिन आव्यो जागो दुरदिन आव्यो ॥
धरो प्रभु अवतार अबे धरणी मां रे, धरणी मां रे ।
बंधी गया छे पाप बहु सृष्टि मां रे, सृष्टि मां रे ॥
दृष्टि अमी नी भारत पर बरसाओ रे, बरसाओ रे ।
रंक उगारो आव्यो दुरदिन आव्यो जागो दुरदिन आव्यो ॥

प्यारा हिन्दोस्तान

प्यारा हिन्दोस्तान हमारा प्यारा हिन्दोस्तान ।
कभी चांदनी कभी अन्धेरा ।
सभी सुखों का यहां बसेरा ।
ऊषा की मुस्कान निराली ऊषा की मुस्कान ।
प्यारा हिन्दोस्तान हमारा प्यारा हिन्दोस्तान ॥
ऐसा हिन्दोस्तान कि जिसपर बिखर रहा धनधाम ।
करोड़ों नर रत्नो की खान ।
हिमालय शोभित मुकुट महान ।
गंगा यमुनाकी धारायें गाती कल२ गान ॥
सुन२ कर गंधर्व लजाते ऐसी मीठी तान ।
प्यारा हिन्दोस्तान हमारा प्यारा हिन्दोस्तान ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अन्यायी ने भारत का धन लूटलिया।
जनताका सर पत्थर लेकर कूटदिया॥
भारत को कर दिया श्मसान समान।
स्वर्ग बनाने इसे पधारे थे श्री गाँधी भगवान॥
प्यारा हिन्दोस्तान हमारा प्यारा हिन्दोस्तान॥

भारत माता

ऐ मेरी जान भारत तेरे लिये यह सर हो।
तेरे लिये ही जर हो तेरे लिए जिगर हो॥

हिचकूं न तेरी सेवा से मेरी जान भारत।
गर्दन पे मेरी रक्खा शमसेर या तबर हो॥

ऐ मेरी जान भारत तेरे लिये यह सर हों।
तेरे लिये ही सर हो तेरे लिये जिगर हो॥

गम जान के लिये भी मुझ को कभी न होगा।
भारत तेरे लिये ही आती है काम गर हो॥

ऐ मेरी जान भारत तेरे लिये ये सर हो।
तेरे लिये ही जर हो तेरे लिये जिगर हो॥

किस्मत का तेरी अख्तर चमके फिर आसमां पर।
सेवा में तेरी माता गर जिन्दगी बसर हो॥

ऐ मेरी जान भारत तेरे लिये यह सर हो।
तेरे लिये ही जर हो तेरे लिये जिगर हो॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भारत ही में सदर मैं पैदा हूं और मरूं मैं।
ईश्वर न कुछ हो मन में यह आरजू मगर हो॥
ऐ मेरी जान भारत तेरे लिये यह सर हो।
तेरे लिये ही जर हो तेरे लिये जिगर हो॥
गर देश की ही सेवा हो प्यारा धर्म मेरा।
परमात्मा की तो फिर मेरी तरफ नजर हो॥
ऐ मेरी जान भारत तेरे लिये यह सर हो।
तेरे लिये ही जर हो तेरे लिए जिगर हो॥
जीवन सकल तभी बस समझेगा साधु अपना।
सेवा में मेरी माता सर मेरा गर नजर हो॥

हिन्दोस्ता मेरा

पसे मुर्दन भी होगा हश्र में यों ही बयां मेरा।
मैं इस भारत की मिट्टी हूं यही हिन्दोस्तां मेरा॥
मैं इस भारत के इक उजडे हुए खण्डहर का जर्रा हूं।
यही पूरा पता मेरा यही नामो निशां मेरा॥
खिजां के हाथ से मुरझाये जिस गुलशन के हैं पौधे।
मैं उस गुलशन की बुलबुल हूं वही है गुलिस्ता मेरा॥
कभी आबाद वह घर था किसी गुजरे जमाने में।
हुआ क्या घर बदस्ते गैर उजडा खानुमा मेरा॥
अगर यह प्राण तेरे वास्ते जाये न ऐ भारत।
तो इस हस्ती के तख्ते से मिटे नामो निशां मेरा॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मैं तेरा हूं सदा तेरा रहूंगा बेवफा खादिम ।
तू ही है गुलिस्तां मेरा तूही जन्नत निशां मेरा ॥
मेरे सीने में तेरे प्रेम की अग्नि भडकती है ।
निगाहों में मेरे भावत तू ही है कुल जहां मेरा ॥

स्वागत गीत

धन भाग हमारे सज्जन आये उत्सव में हां आज ।
धन्य हैं हम बालक सारे दर्शन पाये आज ॥
धन्य भाग्य हमारा दिवस आज का सरे हमारे काज ।
गुरुजन आये सज्जन आये विद्वज्जन भी साथ ।
नम्र भाव से सब मिल नावें अपने अपने माथ ।
कर जोड के विनती करते देवें सुशिक्षा आज ॥
ग्रहण करें हम अबोध बालक मिटे मन का ताप ।
हम अज्ञानी अबोध बाल हैं आप हमारे ताज ॥
आशीश देवें प्रेम भाव से होवे फतह हमारे काज ॥

ठुकरा दो या प्यार करो

देव तुम्हारे कई उपासक कई ढंग से आते हैं ।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे कई रंग से लाते हैं ॥
धूमधाम से साज बाज से वे मंदिर में आते है ।
मुक्तमणि बहुमूल्य वस्तुयें लाकर तुम्हें चढाते हैं ॥
मैं ही हूं गरीब इक ऐसा जो कुछ साथ न लाया हूं ।
फिर भी साहस कर मंदिर में पूजन करने आया हूं ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

धूप दीप नैवेद्य नहीं है झांकी का शृंगार नहीं।
हाय गले में पहिनाने को फूलों का भी हार नहीं॥
स्तुति कैसे करूं किस स्वर से मेरे ही माधुरी नहीं।
मन का भाव प्रकट करने को वाणी में चातुरि नहीं॥
नहीं दान है नहीं दक्षिणा खाली हाथ चला आया।
पूजा की भी विधि न जानूं फिर भी नाथ चला आया॥

पूजा और पूजापा प्रभुवर इसी पुजारी को समझो।
दान दक्षिणा और निछावर इसी भिखारी को समझो॥
मैं उन्मत्त प्रेम का लोभी हृदय दिखाने आया हूं।
जो कुछ है बस यही पास है इसे चढाने आया हूं॥

चरणों पर करता हू अर्पण चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है ठुकरा दो या प्यार करो॥
देव तुम्हारे कई उपासक कई ढंग से आते हैं।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे कई रंग से लाते हैं॥

गुरुकुल गीत

प्राणों से हमको प्यारा गुरुकुल हो हमारा।
अज्ञानियों को भी सदज्ञान देने वाला॥
मुनियों का जन्म दाता गुरुकुल हो हमारा।
कट जाय सिर न झुकना यह मंत्र जपने वाले।
वीरों का जन्मदाता गुरुकुल हो हमारा॥
स्वाधीन दीक्षितों पर सब कुछ बहाने वाला।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

धीरों का जन्म दाता गुरुकुल हो हमारा ॥
निज जन्म भूमि भारत रहे क्लेश से अलग ही।
गौरव बढ़ाने वाला गुरुकुल हो हमारा ॥
तन मन सभी न्यौछावर महावीर का सन्देशा ।
जग में ले जाने वाला गुरुकुल हो हमारा ॥
हिम शैल तुल्य ऊंचा भागीरथी सा पावन ।
भूलों का मार्ग दर्शक दुखियों का हो सहारा ॥
आजन्म ब्रह्मचारी ज्योति जगा गया है ।
उस वीर का दुलारा गुरुकुल हो हमारा ॥

घट के पट ले खोल

घट के पटले खोल मनवां घट के पटले खोल ।
सब झूठा है माल खजाना ।
सुपने सा है आना जाना ॥
क्यों इस मिट्टी में भरमाना ।
गया न आवे साथ किसी के बात हृदय में तोल ॥
बाबा घट के पटले खोल मनवा घट के पटले खोल ॥
क्षण भंगुर है तेरी काया ।
मूरख इसमें क्यों भरमाया ॥
चलती फिरती बादल छाया ।
वीर प्रभु का सुमिरन करले यह चोला है अनमोल ।
बाबा घट के पट ले खोल मनवा घट के पटले खोल ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

एक धर्म है सच्चा प्यारा।
क्यों फिरता है मारा मारा॥
मोहन मतलब का जग सारा।
सोहन प्रीति तोड कर जग से जिनवर जिनवर बोल।
बाबा घट के पटले खोल मनवा घट के पटले खोल॥

जहां में कौन किसका है

गरज के यार है यहां सब जहां में कौन किसका है।
न बेटे साथ जाते हैं न पोते साथ देते हैं।
जहां से कूच ठहरा जब जहां में कौन किसका है॥
जिन्हें तू यार समझा है वे हैं संसार ए गाफिल।
कोई किसका हुआ यां सब जहां में कौन किसका हैं॥
नहीं दुनिया झमेला हैं मचा जादू का मेला है।
तमाशाई हैं यां हम सब जहां में कौन किसका है॥
गरज के यार हैं यां सब जहां में कौन किसका है॥

गाओ गाओ गाओ गाओ

गाओ गाओ गाओ गाओ आजादी ना गीतो गाओ—
सो सो दीपमाला प्रकटाओ।
आज अनेरो अवसर आव्यो गाओ गाओ गाओ गाओ॥
जेणे खातिर कईक वीरों शोणित खूब बहाव्या।
एवा वीर शहीदो नी अमर याद बनाओ॥ गाओ— ॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जलियान वाला शहीदों नी रूह आजे पुकार करे।
आजाद थयो है देश आजे आगे कदम बढाओ ॥ गाओ— ॥ २ ॥
नेताजी ना उद्गारो नी अमर याद बनाओ ।
सरदार जवाहर गांधीजी नो सिद्धान्तो अपनाओ ॥ गाओ० ॥

भारत मेरी जन्मभूमि है

भारत मेरी जन्मभूमि है सब तीर्थों का सार ॥
मात पिता के विमल प्रेम से आँगन है उजियार—
उजियार सब तीर्थों का सार ॥ भारत मेरी ॥ १ ॥
खेलत वायु हर्षित भाती नदियां कलकल गाती जातीं ।
हरियाली को राग सुहावे बादल का है राग ॥
सब तीर्थों का सार ॥ भारत मेरी जन्म० ॥ २ ॥
पाप पुण्य का ज्ञान यहां है सब जाति का राज यहां है।
घर घर में है प्यार सब तीर्थों का सार ॥ भारत० ॥
भारत मेरी जन्मभूमि है सब तीर्थों का सार ॥ ३ ॥

इतिहास गा रहा है

इतिहास गारहा है दिन रात गुण हमारा ।
दुनिया के लोगों सुनलो यह देश है हमारा ॥
महो पर हुए हैं पैदा इसका पिया है पानी !
यह मात है हमारी यह है पिता हमारा ॥
गुजरे समय से पूछो रघुवंश की कहानी ।
रघुकुल की राजधानी है राम राज्य प्यारा ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यह देवता हिमालय सब कुछ ही जानता है ।
गुण गा रही है निश दिन गंगा की निर्मलधारा ॥
पोरस की वीरता को तू ही बता दे झेलम ।
यूनान का सिकन्दर था तेरे तट पर हारा ।
चित्तौड तूही बता दे क्षत्राणियों का जौहर ।
पद्मा की भस्मी में था जौहर छुपा हमारा ॥
जंगल में था बसेरा और घास का था भोजन ।
लोगों न भूल जाना वह था प्रताप हमारा ॥

कोरस

ऐ हिन्द के सिपाहियों
ऐ नौजवान भाइयों
ऐ मौत के सैदाइयों
आगे बढो आगे बढो ॥
तलवार हमारे हाथ है
तब डरने की क्या बात है
जब हिन्द हमारे साथ है
आगे बढो आगे बढो ॥
तलवार ले कर हाथ में
दुशमन की निकलो घात में
इस बीच अंधेरी रात में
आगे बढो आगे बढो ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बाबू कलरकी छोड कर
दुशमन से नाता तोड कर
कन्धे से कन्धा जोड कर
आगे बढो आगे बढो ॥
सामने पहाड में
दुशमन की भीडमभाड में
इन गोलों की बौछार में
आगे बढो आगे बढो ॥
सामने क्या शोर है
अब तो जमाना ओर है
यह आजादी की डोर है
आगे बढो आगे बढो ॥

वन्दे मातरम्

फूल चमन के खिल गये खिल गये
गाई खिजां उस पार निशाने लड गये रे
वन्दे मातरम् ॥
झण्डा तिरंगा हाथ में लेकर
भारत मां को शीश नवा कर
धन्य जवाहर चली वो चाल उदू पे पड गये रे
वन्दे मातरम् ॥
भारत का विधान बना कर
वीर जवाहर को बुलवा कर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

होगये दोसो साल समझलो मात क्यो पीछे पड गये रे
वन्दे मातरम् ॥

बाबा गांधी और मौलाना ।
किया वही जो दिल में ठाना ॥
विदा किये महमान पकड कर कान ओ गोरों से भिड गये रे ।
वन्दे मातरम् ॥

बेटी लार्ड लुई माउन्टबेटन ।
वीर जवाहर है शान हिन्द की ॥
ओ जिन्ना पाकिस्तान दो टुकडे उड गये रे ॥
तिरंगे चढ गये रे वन्दे मातरम् ॥

वीर शिरोमणि देश

म्हारो वीर शिरोमणि देश म्हाने प्यारो लागे छे ।
ऊंचा ऊंचा मगरा ऊपर ऊंचो गढ चित्तौड ।
और जगत री गढियाँ सारी सघलां रो सिरमौड ॥
म्हाने प्यारो लागे छे ॥ म्हारो० ॥ १ ॥

निर्मल जल से भरिया सरवर ढेबर राजसमन्द ।
पिछोला री देख छटा म्हाने आवे घणो आनन्द ॥
म्हाने प्यारो लागे छे ॥ म्हारो० ॥ २ ॥

कल कल करती नदियां बहवे बेडच और बनास ।
पांचों धाम रा तीरथ इण में पूरे मन की आस ॥
म्हाने प्यारो लागे छे ॥ म्हारो० ॥ ३ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्री एकलिंग श्री नाथ द्वारिका चारभुजा गढबोर ।
केशरियाजी केशर मांही रेवे सदा तरबोर ॥
म्हाने प्यारो लागे छे ॥ म्हारो० ॥ ४ ॥

रजवंशी कुल में जनम्या वीर प्रताप महान ।
कतरा ही वीरां री जननी या वीरां री खान ॥
म्हाने प्यारो लागे छे ॥ म्हारो० ॥ ५ ॥

जो दृढ राखे धर्म को तिहि राखे करतार ।
इण मन्तर रो जाप जपे नित मेवाडी सरदार ।
म्हाने प्यारो लागे छे ॥ म्हारो० ॥ ६ ॥

भक्ति में मीरां बाई रो नाम घणो अनमोल ॥
सतियां में पद्मावती ने राख्यो सतरो कोल ॥
म्हाने प्यारो लागे छे ॥ म्हारो० ॥ ७ ॥

ऐ जननी मेवाडी माता अबतो नैणा खोल ।
विश्व कहे यों बालक थांरो अबतो मूंडे बोल ॥
म्हाने प्यारो लागे छे ॥ म्हारो० ॥ ८ ॥

नाव पडी मझधार

नाव पडी मझधार हमारी—
तारेगा वल्लभ सरदार ।
यस यस विदाउट फेज सरटनली
छोड जगत की झूठी माया
लीजे पंच महाव्रत धार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

थेंक्यू वेलडन वेरी वेल
महिमा अगम तेरी
ओह विक्ट्री द्रू दी
जंजीर आन तोड
कम कम ओह माइ लार्ड
नाचें गावें खुशियां मनावें मुख से बोलें जयजय कार ॥
हिप हिप हुर्रे
सब क्रोड राग द्वेष
की बैंड आलवेज
ज्योति जगे दिन रैन
यस यस विदाउट पेन
नर नारी दर्शन को आवे
दर्शन करके सुख पावें
फेअर वेल गुड बाई
नाव पड़ी मझधार हमारी तारेगा वल्लभ सरदार ॥

प्रभु दर्शन के दोहे

आव्यो दादा ने दरबार करो भवोदधि पार ।
खरो तू छे आधार मोहे तार तार तार ॥
आत्म गुण नो भंडार तारी महिमा नो पार ।
तारी मूर्ति मनोहर हरे मन ना विकार ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देख्यो सुन्दर देदार करो पार पार पार ॥
तारी मूर्ति मनोहार हरे मन ना विकार ।
खरो हिया नो हार बन्दु वार वार वार ॥
आव्यो देरासर मोझार कर्यो जिनवर जुहार ।
प्रभु चरण आधार करो सार सार सार ॥
आत्म कमल सुधार तारी लब्धि छे अपार ।
एनी खूबी नो नहीं पार विनति धार धार धार ॥

सरस शांति सुधारस सागरम् शुचितरं गुणरत्न महागरम् ।
भविक पंकज बोधि दिवाकरम् प्रतिदिनम् प्रणमामि जिनेश्वरम् ॥

शीतल गुण जेमां रह्यो शीतल प्रभु मुख अंग ।
आत्म शीतल करवा भणी पूजा अहरिया अंग ॥

प्रभु दर्शन सुख सम्पदा प्रभु दर्शन नव निद्ध ।
प्रभु दर्शन थी पामिये सकल पदारथ सिद्ध ॥
भावे भावना भाइये भावे दीजे दान ।
भावे जिनवर पूजिये भावे केवल ज्ञान ॥
प्रभू नाम की औषधि खरा मन से खाय ।
रोग पीडा व्यापे नहीं महा रोग मिट जाय ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रभु पूजन मैं चालियो घिस केसर घनसार ।
नव अंगे पूजा करूं भव सायर पार उतार ।
जिवडा जिनवर पूजिये पूजा ना फल जोय ।
राज नमें प्रजा नमे आण न लोपे कोय ॥
कुम्भे बांध्यो जल रहे जल बिन कुम्भ न होय ।
ज्ञाने बांध्यो मन रहे गुरु बिन ज्ञान न होय ॥
गुरु दीपक गुरु देवता गुरु बिन घोर अन्धार ।
जो गुरु वाणी वेगडा रडवडिया संसार ॥
प्रभुजी फूलां केरा बाग में बेठा श्री महाराज ।
ज्यू तारा बिच चन्द्रमा ज्यूं सोहे महाराज ॥

तर्ज–आजा मोरी बरबाद···

गा ले·····गाले प्रभु गुणगान मोहब्बत से पियारे ।
है वो ही जो बिगडी हुई तदबीर सुधारे ॥
गाते ही न हो शुष्क कभी जीवन में आशा ।
जिनके गुणों में लग गये शुभ भाव हमारे ॥
है वो ही जो बिगडी हुई तदबीर सुधारे ॥ १ ॥
श्रमण महावीर हमें बचाना है लेकिन ।
गाते हैं तेरे गुण को गावेंगे पियारे ॥
है वो ही जो बिगडी हुई तदबीर सुधारे ॥ गाले० ॥ २ ॥
आत्म कमल में तेरे चरणों का सहारा—चरणोंका सहारा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लब्धिसूरि तुम्ही से आशा रखे हजारे ॥
है वो ही जो बिगडी हुई तदबीर सुधारे ॥ गाले० ॥ ३ ॥

तर्ज–अंखिया मिला के···

सिद्ध गिरि जा के दर्शन पाके जिया सुख पाना—
हो हो जिया सुख पाना।
ऊंची २ देरिया में प्रभुजी बिराजे मोरा ।
चढ गिरिवर मैं तो पास आऊंजी तोरा ॥
सिद्धगिरि जा के— ॥ १ ॥
इणि गिरिवरियेजी साधु अनन्ता सिद्धा ।
कांकरे कांकरे सिद्ध जग प्रसिद्धा ।
सिद्धगिरि जा के ॥ २ ॥
तीरथ का धाम देखो दादाजी दर्शन पाये।
देखोजी देखो आतम विजय सुख मिलाये ॥
सिद्धगिरि जा के ॥ ३ ॥

तर्ज—जब तुम्हीं चले परदेश

अब सुनो सहु सन्देश प्रभु आदेश ।
सदा सुखकारा जीवन में वो ही सहारा ॥
जब आफत घिर घिर आएगी ।
कर्मन की फौज सतायगी ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जब तुम्हीं कहो इस जग में कौन तुम्हारा।
जीवन में वोही सहारा ॥ अब सुनो० ॥ १ ॥

उपकारी प्रभू की पूजा करो।
महावीर प्रभू का ध्यान धरो ॥
प्रभू नाम सदा सुख धाम जगत में प्यारा ॥
जीवन में वो ही सहारा ॥ अब सुनो० ॥ २ ॥

शासन स्वामी शिवधामी हैं।
अविनाशी अन्तर्यामी हैं ॥
चरण कमल में शरण ग्रहो विजय सुखकारा।
जीवन में वो ही सहारा ॥ अब सुनो० ॥ ३ ॥

तर्ज—अँखिया मिला के

दिल को मिला के, जिन को ध्या के पल पल गाना।
हो ऽ हो पल पल गाना ॥

गाओगे होगे न दुखी अय जीना होय सुखी।
हो जिनजी की खूबियाँ मैं गाऊं कर्म हिलाऊं ॥
दिल को मिला के० ॥ १ ॥

आहा क्या भक्ति पाया जिनजी का गुण है गाया।
हो नयन भरे हैं जोई जोई जो सुख बहाना ॥
दिल को मिला के० ॥ २ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जाने का चित्त न हो जिनजी को ध्यायें जायें।
हो आत्म कमल मां लब्धि गुण तो तुम्हारे गाये॥
दिल को मिला के० ॥ ३ ॥

तर्ज–अब तेरे सिवा कौन मेरा

अब तेरे सिवा वीर मेरा कौन खिवैया।
भगवान किनारे से लगा दे मोरी नैया ॥

मेरी खुशी की दुनिया कर्मों ने छीन ली।
मेरे सुखों की कलियां आकर के चीन ली॥
अब तूही बचा मुझको प्रभु लाज रखैया।
भगवान किनारे से लगा दे मोरी नय्या॥

पूजा नहीं है पूरी अधूरी है आरती।
ओ वीर महावीर तुझे दुनिया पुकारती॥
कहती है प्रभू बार बार ले के बलैया।
भगवान किनारे से लगा दे मेरी नैया॥

अब तेरे सिवा वीर मेरा कौन खिवय्या।
भगवान किनारे से लगा दे मेरी नय्या॥

तर्ज–कभी याद कर के गली पार कर के

भक्ति भाव भज के सभी साज सज के गुण गाना,
सेवा से रंगना ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मालिक मेरे मन के तेरे दास बन के गुण गाना ।
सेवा से रंगना ॥
जिन गुण गाके गुण सभी जोडना ।
मोह की मदिरा से भक्ति न छोडना ॥
गुण सभी जोडना ॥
भवोभव भम के जग घुम २ के ।
गुण गाना सेवा से रंगना ॥
सेवा के खातिर मैं आयो हूं द्वार पर ।
अब स्थिर होना मेरी नजर पर ॥
आयो हूं द्वार पर ।
तेरा भजन भज के सारा साज सज के ।
मेरे दिल को भक्ति से रंगना ॥
वीतरागी तुम हो मै हूं सरागी ।
सेवा में पाया प्रभु बडभागी मैं हूं सरागी ॥
गुण गाना सेवा में रंगना ॥
रंगीली मूरति को दिल में बिठा ली ।
गुणों की आली सुधा की प्याली मन में बिठा ली ॥
आत्म कमल खिला के ज्ञान लब्धि मिला के ।
गुण गाना सेवा से रंगना ॥

तर्ज-आ जा मोरी बरबाद

राजा—राजा, राजा मोरे जिनराज अब प्राण जीवन पियारे ।
तू एक है डूबती हुई नैया मेरी तारे ॥ राजा ऽ राजा० ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देखे भी न थे पहले दीदार जैसे तुम हां दीदार जैसे तुम।
भेटे भी न थे दिल से भगवान हमारे ॥ तू एक० ॥ १ ॥
आखिर में मुझे ख्याल तो आता है लेकिन आता है लेकिन।
रहते हैं तेरे शरणे शासन के सितारे ॥ तू एक० ॥ २ ॥
कुरबान है जीवन तेरे वचनों का इशारा वचनों का इशारा।
हमने सभी दिन आज तत बेकार गुजारे ॥ तू एक० ॥ ३ ॥

अगर जिनदेव के चरणों में

अगर जिनदेव के चरणों में तेरा ध्यान हो जाता।
तो इस संसार सागर से तेरा उद्धार हो जाता ॥
न होती जगत में ख्वारी न बढ़ती कर्म बीमारी।
जमाना पूजता सारा गले का हार हो जाता ॥
रोशनी ज्ञान की खिलती दीवाली दिल में हो जाती।
हृदय मंदिर में भगवन का तुझे दीदार हो जाता ॥
परेशानी न हैरानी दशा हो जाती मस्तानी।
धर्म का प्याला पी लेता तो बेडा पार हो जाता ॥
जमीं का बिस्तरा होता व चादर आसमां बनता।
मोक्ष गद्दी पर फिर प्यारे तेरा घरबार हो जाता ॥
चढाते देवता तेरे चरण की धूल मस्तक पर।
अगर जिनदेव की भक्ति में मन इकतार हो जाता ॥
'राम' जपता अगर माला का मनका एक भक्ति से।
तो तेरा घर ही भक्तों के लिये दरबार हो जाता ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जय महावीर जय महावीर गाये जा

जय महावीर गाये जा, जय महावीर गाये जा—
वीर का सन्देश बन्धु विश्व को सुनाये जा ।
सच्ची राह दिखाये जा ॥

यह संसार है असार धर्म ही है इस में सार ।
रत्नत्रय धार प्यारे मोक्ष मार्ग पाये जा ॥
उनका प्रण निभाये जा ॥

है अनादि में फंसा मोह के तू जाल में ।
शुद्ध भाव धारके उस से पिण्ड छुडाये जा ।
दुख को मिटाए जा ॥

कर्म शत्रु है महान तू भी तो महान है ।
ध्यान की कमान तान उन को तू भगाये जा ।
वीरता दिखाये जा ॥

अनादि काल में फंसा इस से तेरा क्या हुआ ।
बन्धन तोड अनादि का आत्म शुद्ध बनाए जा ॥
ध्यान तू लगाये जा ॥

भगवान महावीर जो दुनिया में न आते

भगवान महावीर जो दुनिया में न आते ।
दुख दर्द दुनियां का कहो कौन मिटाते ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पशुओं की गर्दनों पर चला करते थे दुधारे ।
बे मौत बेगुनाह कटा करते थे बेचारे ॥
मंदिर मठों में खूं की मचा करती होलियां ।
यज्ञों में प्राणियों की जला करती टोलियां ॥
भगवान दया कर के जो उनको न छुडाते ।
दुख दर्द दुनिया का कहो कौन मिटाते ॥

भारत की देवियां बनी थीं पैर की जूती ।
थी शुद्ध वर्ण वाली बनी जाति अछूती ॥
बीमारी पंडितों की कहो कौन मिटाते ।
शास्त्रों का सही अर्थ हमें कौन बताते ॥
भगवान जो आ कर उन्हें छाती न लगाते ।
जो वीर अनेकान्त की बूटी न पिलाते ॥ दुख० ॥

भगवान महावीर जो उपकार न करते ।
शुद्ध कर्म दया धर्म का उपदेश न देते ॥
भगवान महावीर जो दुनिया में न आते ।
दुख दर्द दुनियां का कहो कौन मिटाते ॥

पधारो पधारो पधारो महावीर

पधारो पधारो पधारो महावीर अहिंसा का मंत्र सुनादो महावीर

निखिल जगत में जिन जो सुहाया ।
वीर वही मन में अति भाया ॥
दुनिया को फिर से सुनादो महावीर, सुनादो सुनादो···॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भीषण दृश्य न देखे जाते ।
क्यों न जिनवर सौम्य जगाते ॥
दारुण दृश्य भगा दो महावीर भगा दो भगा दो भगा दो म०
जैन विभाजित होते जाते ।
नामो निशां मिटाते जाते ॥
जैनों में प्रेम बढा दो महावीर बढादो ३ महावीर पधारो ३ ॥
हितकर ज्ञान बताओ जिनवर ।
धर्म ही जग में सब से बढकर ॥
नूतन ज्योति जगादो महावीर जगादो ३ पधारो ३ महावीर ॥
पधारो पधारो महावीर अहिंसा का मन्त्र सुनादो महावीर ॥

भारत माता करे पुकार

भारत माता करे पुकार— विश्व एक हो ।
महावीर क्या करे पुकार— विश्व प्रेम हो ।
जैन धर्म क्या करे पुकार— विश्व एक हो ।
फूट करे क्या २ झनकार— सम्प्रदाय हो ।
बच्चों तुम किसकी सन्तान- महावीर की ॥
अप अप अहिंसा धर्म डाउन डाउन हिंसा धर्म ॥

मोरे मन मंदिर में आन बसो

मोरे मन मंदिर में आन बसो भगवान ।
घण्टे और घडियाल नहीं है ।
सामग्री का थान नहीं है ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लेकिन एक प्रेम का दीपक जलता है भगवान ॥
मोरे मन मंदिर में आन बसो भगवान ॥
क्रोध नहीं है क्लेश नहीं है ।
बगुले का सा भेष नहीं है ॥
छोटी सी एक प्रेमकुटी है प्रेमका है स्थान ।
मोरे मन मंदिर में आन बसो भगवान ॥
टूटा फूटा यह मन्दिर मेरा ।
छाया हुआ है घोर अन्धेरा ॥
तुम आओ तो हो उजेला तुम बिन है सुनसान ॥
मोरे मन मंदिर में आन बसो भगवान ॥

देखो श्री पार्श्व तणी मूर्ति···

देखो श्री पार्श्व तणी मूर्ति अलबेलडी उज्ज्वल भयो अवतार रे ।
मोक्षगामी भव थी उगारजो शिव धामी भव थी उगारजो ॥
मस्तके मुकुट सोहे काने कुण्डलियां ।
गले मोतियन केरो हार रे मोक्षधामी भव थी—
पगले पगले तारा गुणों संभारता ।
अन्तर मां विसरे उचाट रे मोक्षधामी भव थी—
आप ना ते दर्शन प्रभु आत्मा जगाडिया ।
ज्ञान दीपक प्रकटाय रे मोक्षधामी भव थी—
आत्मा अनन्ता प्रभू आपे उगारिया ।
तारो सेवक ने भव पार रे मोक्षधामी भव थी—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देखी श्रीपार्श्व तणी मूर्ति अलबेलडी उज्ज्वल भयो अवतार रे।
मोक्षगामी भव थी उगारजो शिवधामी भव थी उगारजो॥

जैनों बच्चों को आप पढाया करो

जैनों बच्चों को आप पढाया करो।
उन्हें वीर सन्तान बनाया करो॥
जिस देश में विद्या कला का खूब ही प्रचार है।
इतिहास उनका देख लो वे शक्ति का भंडार है॥
ऐसी बातों पे ध्यान लगाया करो।
जैनों बच्चों को आप पढाया करो।
थी भली वो औरतें तब शांति का साम्राज्य था।
धन्यधान्य पूर्ण देश था स्वाधीनता का राज्य था॥
निज नाम को आप बढाया करो।
जैनों बच्चों को आप पढाया करो॥
दुर्भाग्यवश इस जाति की ख्याति अति जाती रही।
सब लालची हो कर विद्या कला जाती रही॥
ऐसी नींद को आप उडाया करो।
जैनों बच्चों को आप पढाया करो॥
फतह चाहो उन्नति तो ज्ञान का आधार लो।
शिक्षित बनाना बालकों का पुण्य का आभार लो॥
आप बालकों को ज्ञान दिलाया करो।
जैनों बच्चों को आप पढाया करो॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चालो केसरिया ना देश मां

हां रे दोस्त चालो केसरिया ना देश मां हां रे दोस्त—
मधुर मधुर वाजा वाय भावी लोको भजन गाय ॥
केसर नो कीच मचाय हां रे दोस्त चालो केस० ॥ १ ॥
चित्तौड थई ने मेवाड रूडो आवशे कुम्भा राणानो थंभ जोवा-
वशे ॥

जैन गुरुकुल नी मुलाकात थाशे,
प्राचीन तीर्थ नी कीर्ति उजवाशे ॥

करेडा पार्श्व नी यात्रा थाशे हां रे दोस्त चालो केस० ॥
मारवाडे थई मेवाडे आवशुं राजनगर नी यात्राये जावशुं ॥
दयालशाह ना देहरा पुजावशुं हां रे दोस्त चालो केसरिया ना० ॥
देलवाडा ना देहरे आवशुं, अदभुतजी नी यात्राए जावशुं ॥
पंच तीर्थी ना दर्शन पावशुं हां रे दोस्त चालो केसरिया ना० ॥
उदयपुर शहर सुन्दर आवशे पांत्रीश देहरा जोवावशे ॥
आयड नी यात्रा थाशे हां रे दोस्त चालो केसरिया ना० ॥
डूंगरो वटीवी धुलेवा पोंचशुं भव अटवी ना फेरा मेटशुं ।
पूजा भक्ति करी आनंद पावशुं हां रे दोस्त चालो केसरिया ना०
चार दिवस शांति थी पूजशुं चार गतियों ना बंधन तोडशुं ।
नमी २ दादा ने भेटशुं हां रे दोस्त चालो केसरिया ना देश मां
भले होय घणो पाप भले होय दिले पाप ॥
फतह करशु तारो जाप हां रे दोस्त चालो केसरिया ना० ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भवि भावे देरासर···

भवि भावे देरासर आओ जिनन्दवर जय बोलो ।
पछी पूजन करी शुभ भावे हृदय पट खोलो ने ॥

साखी

शिवपुर जिन थी मांगजो, मांगी भव नो अन्त ।
लाख चौरासी वार वा क्या रे थई शुं अमे प्रभु सन्त रे ॥
भवि इम बोलो ने भवि भावे ॥ १ ॥

मोंघी मानव जिन्दगीं मेंघो प्रभु नो जाप ।
जपी चित्त थी दूरे करो तमे कोटि जन्म रा पाप रे ॥
हृदय पट खोलो ने भवि भावे ॥ २ ॥

तू छे म्हारो सायबो हूं छू थारो दास ।
दीनानाथ मुझ पाली ने आपोने शिवपुर वास रे ॥
हृदय पट खोलो ने भवि भावे ॥ ३ ॥

छाणी गाम नो राजियो नामे शांति जिनन्द ।
आत्म कमल मां ध्यावतां शुद्ध मले लब्धि नो वृन्द रे ॥
हृदय पट खोलो ने भवि भावे ॥ ४ ॥

हे नाथ मोरी नैया

हे नाथ मोरी नय्या उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है अब और निभा देना ॥
दल बल के साथ माया घेरे जो मुझे आकर ।
तो देखते न रहना झट पट ही बचा लेना ॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

क्रोधाभिमान वश में यदि भूल तुमको जाऊं ।
हे नाथ कहीं तुम भी मुझको न भुला देना ॥ २ ॥
हे नाथ मेरी नय्या उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है अब और निभा लेना ॥ ३ ॥

राजुल नेमनाथजी का ब्याह

ढोल निशाना गड गड्या वागी वलि शरणाई ।
नगर जनो सहु हर्ष मां लावे लग्न वधाई ॥
घर घर में तोरण बंधाव्या
आंगणे आंगणे रंग पुराव्या
सोना रुपा ना थाल भराव्या
हीरा माणक रतन वधाव्या
मांडवडा मोंघा सणगार्या
मोंघेरा महमान तेडाव्या
राजुल बैठी गोख मां सज सोलह शणगार ।
आवे कन्थ कोडामणो हैये हरख अपार ॥
आवे आवे रे नेम कुमार ॥ १ ॥
सखियो सहु सणगार करे छे मीठी २ बात करे छे ।
मन्द मन्द हंसती शरमाती राजुल करे विचार ॥
ढोल नगारा वागे वाजा कोड भन्या आवे वर राजा ।
धामधूम थी ठाठ माठ थी आवे कई नर नार ॥
आवे आवे रे नेम कुमार ॥ २ ॥
आवी रही छे जान ज्यां आवे आवे रे नेम कुमार ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

त्यां दूर दूर थी चीस कारमी साजन शाथी आवी ।
थंभी गया सऊ ढोल नगारा जान त्यां थंधावी ॥
आकुल व्याकुल थई ने अहिं तहिं दौडे सहु नरनारी !
राजुल हैये पडी बीजली थई वेदना भारी ॥
आवी रही छे जान ज्यां मण्डप ने मोझार ।
नेम कुमारे शांभल्यो पशुओ नो पोकार ॥
धानी आ चिचिआरियो पूछंता तत्काल ।
केम रडे आ मूगा प्राणी उत्तर द्यो ततकाल ॥
प पशुओ ना वध थाशे पछी भोजनिया रंधाशे ।
साजन माजन काजे एना भोजन थाल भराशे ॥
प्राण बचाओ प्राण बचाओ प्रभुजी अमारा प्राण बचाओ ।
जान तमारीआवे भले पण जान अमारी शिदने जलाओ ॥
प्राण बचाओ करुणा सागर प्राण बचाओ—आवे आवे रे
पाछा वलो पाछा वलो गरजे नेम कुमार ।
आज्ञा दीधी ततक्षणे सुणी पशुओ नो पोकार ॥
मारे काजे अनन्त जीवनी हिंसा नथी सहवाली !
नथी परणावुं नथी परणावुं आ कतल नथी जोवाती ॥
धीमे धीमे जान पाछी पाछा पगला भरवा लागी ।
ध्रश के ध्रश के राजुल रडती पालव पाथरवा लागी ॥
पाछा नव जाशो हो प्रीतम पाछा नव जाशो ।
पालव पाथरी विनवुं आजे पाछा नव जाशो ॥
प्रीत करी ने परिहरशो पाछा नव जाशो ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्नेह तणा म्हारा मीठा सरोवर क्रूर थई न सुकवशो ।
सोना रूपाना थाल भराव्या हीरा माणक रतन वधाव्या ॥
उर ने आसनिये पधराव्या ।
उर मां दाह न देशो प्रीतम पाछा नव जाशो ।
ना मान्या नेम कुमार, सहु विनवे वारम्वार ॥
पालव पाथरी पगमां पडती राजुल रमणी अतिकर गरती ।
हैया पाट रडीए तो पण ना मान्या भरतार ॥
ना मान्या नेमकुमार ।
कर्म तणी गति ना केम पामी शके आ संसारी ।
कर्म तणी गति न्यारी केम पामी शके आ संसारी ॥
घेर आवी ने नेमकुमारे दीधो वरसी दान ।
त्याग्या मिलकत महेल सा सौ त्याग्या वैभव स्थान ॥
दीक्षा लई साधु थया ने छोडियो आ संसार ।
सगा सम्बन्धी सहु ने छोडी वस्या जइ गिरनार ॥
एक जोगी चाल्यो जाय जोबनवन्तों ब्रह्मचारी ए ।
सहु ने छोडी जाय ॥
सौयम रंगे ए रंगायो सहु ने रंगी जाय ।
राजुल ने पण लीधी संग मां बन्ने साथे जाय ॥
लग्न तणी वर माला बाँधी मुगति नी माल ।
एक थई ने मुक्ति द्वारे बन्ने उड़ी जाय ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सिद्धाचल ना वासी

सिद्धाचलना वासी जिनने लाखों प्रणाम जिनने लाखों प्रणाम ।
आदि जिनेश्वर सुखकर स्वामी ।
तुझ दर्शन थी शिवपद धामी ॥
थया छे असंख्य जिनने लाखो प्रणाम जिनने लाखों प्रणाम ॥१॥

विमल गिरिना दर्शन करतां ।
भव भय ना तुम तिमिर हर्ता ॥
आनन्द अपार जिनने लाखों प्रणाम जिन ने लाखों प्रणाम ॥२॥

हूं पापी छूं नीच गति गामी ।
कञ्चन गिरि नो शरणो पामी ॥
तरशुं जरूर जिनने लाखों प्रणाम जिन ने लाखों प्रणाम ॥३॥

अणधार्या आ समय मां दर्शन ।
करतां हृदय थयो अति निर्मल ॥
जीवन उजवाल जिनने लाखों प्रणाम जिनने लाखों प्रणाम ॥४॥

गोडी पार्श्व जिनेश्वर केरी ।
करण प्रतिष्ठा विनती घनेरी ॥
दर्शन पाम्यो मानी जिनने लाखो प्रणाम जिनने लाखों प्रणाम ।

संवत ओगणीसे नेवु वरषे ।
शुद्ध हृदय थी कन्या दर्शन हरषे ॥
मल्यो ज्येष्ठ शुभमास जिनने लाखों प्रणाम जिनने लाखोंप्रणाम ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आत्म कमल मां सिद्धगिरि ध्याने ।
जीवन मलशे केवल ज्ञाने ॥
लब्धिसूरि शिवधाम जिनने लाखों प्रणाम जिमने लाखों प्रणाम ।

जनारूं जाय छे जीवन

जनारूं जाय छे जीवन जरा जीवन ने जपतो जा ।
हृदय मां राखी जिनवर ने पुराणो पाप धोतो जा ॥
बनेलो पाप थी भारे बली पाप कटे शिद ने ।
सलगती होली हैया नो अरे जालिम बुझातो जा ॥
दया सागर प्रभु पारस उछाले ज्ञान की छोलो ।
उतारी वासना वस्त्रों अरे पामर तू न्हातो जा ॥
जिगर मां डंखता दुखो थया पापे पिछानी ने ।
जिनन्दघर ध्यान नी मस्ती वडे एने उडातो जा ॥
अरे आतम बनी साणो बतावी शाणपण त्हारूं ।
हटावी भूठी जग माया चेतन ज्योति जगातो जा ॥
खिल्या जो फूलडा आजे जरूरे ते काले कर मासे ।
अखण्ड आतम कमल लब्धि तणी लय दिल लगातो जा ॥
जनारूं जाय छे जीवन जरा जिनवर ने जपतो जा ।

वासुपूज्य विलासी

वासुपूज्य विलासी, चम्पा ना वासी, पूरो हमारी आस ॥
करूं पूजा हूं खासी, केसर वासी, पुष्प सुवासी पूरो अमारी आस ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चैत्यवन्दन करूं चित्त थी (प्रभुजी) गाऊं गीत रसाल ।
एम पूजा करी विनति करूं छूं आपो मोक्ष विलास रे ॥ १ ॥
दियो कर्म ने फासी, काढो कुवासी, जेम जाय नासी ।
पूरो अमारी आस वासुपूज्य विलासी चम्पा ना वासी··· ॥
आ संसार घोर महोदधि थी काढो अमने बहार ।
स्वारथ ना सहु कोई सगा छे मातपिता परिवार रे ॥
बालमित्र उलासी विजय विलासी अरजी खासी ।
पूरो अमारी आस वासुपूज्य विलासी चम्पा ना वासी···॥

माता मरुदेवी ना नन्द

माता मरुदेवी ना नन्द देखी ताहरी मूरति मारूं दिललुभाणुजी ।

करुणा नागर करुणा सागर काया कंचन वान ।
धोरी लंछन पाउले कई धनुष पांचसौ मान ॥
त्रिगडे बेसी धर्म कहन्ता सुणे परषदा बार ।
जोजन गामिनि वाणी मीठी वरसंति जलधार ॥
उर्वशी रूडी अप्सरा ने रामा छे मन रंग ।
पाये नूपुर रणझणे कई करती नाटारम्भ ॥
तू ही ब्रह्मा तू ही विधाता तू जग तारण हार ।
तुझ सरीखो नहीं देव जगत मां अडवडिया आधार ॥
तू ही भ्राता तू ही त्राता तू ही जगत नो देव !
सुरनर किन्नर वासुदेवा करता तुझ पद सेव ॥
श्री सिद्धाचल तीरथ केरो राजा ऋषभ जिनन्द ।
कीर्ति करे मालक मुनि ताहरी टालो भव भवफन्द ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रार्थना

महावीरस्वामी हो अन्तर्यामी हो त्रिशलानन्दन काटो भवफंदन ।
बाले ही पन में तप कीनो वन में ।
दर्शन दिखाना भूल न जाना ॥
पार लगाना कृपा निधाना ।
महिमा तुम्हारी है जग न्यारी ॥
महावीरस्वामी हो अंतर्यामी हो त्रिशला नंदन काटो भवफन्दन ॥
सुध लो हमारी हो व्रतधारी ।
वन खण्ड में तप करने वाले ॥
केवल ज्ञान के पाने वाले ।
हो उपदेश सुनाने वाले ॥
हिंसा पाप मिटाने वाले पशुवन बंध छुडाने वाले ।
स्वामी प्रेम छुडाने वाले हो तुम नियम सिखाने वाले ॥
पूरण तप के करने वाले भक्तों के दुख हरने वाले ।
पांवापुर में आने वाले ॥

धर्म के प्रचार में

धर्म के प्रचार में जीवन को बिताये जा ॥
जाति के सुधार में तन मन को लगाये जा ॥
दौलत को लुटाये जा ॥
है अविद्या का प्रचार छा रहा है अन्धकार ॥
ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान को हटाये जा ॥
रोशनी दिखाये जा ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रूढियों से तंग आज हो रही सारी समाज ।
रूढियों कुरीतियों को बन्धन को छुडाये जा ॥
सुरीतियां चलाये जा ॥ २ ॥

हो रहे लडके नीलाम हैं दुखी जाति तमाम ।
ब्याहो के वे हुए सोदे उनको तू हटाये जा ॥
लालच को हटाये जा ।

प्रेम का प्रसार हो द्वेष का प्रहार हो ।
संगठन बनाय अपनी शक्ति को बढाये जा ॥
फूट को मिटाये जा ॥ ४ ॥

आज शिवराम देश सह रहा भारी कलेश ।
उसके अब उद्धार में जान को बढाये जा ॥
आजादी दिलाये जा ॥ ५ ॥

तेरे पूजन को भगवान

तेरे पूजन को भगवान बना मन मंदिर आलीशान ।

किसने जानी तोरी माया किसने भेद तुम्हारा पाया ।
हारे ऋषि मुनि कर ध्यान बना मन मंदिर आलीशान ॥

तू ही जल में तू ही थल में तू ही वन में तू ही मन में ।
तेरा रूप अनूप जहान बना मन मंदिर आलीशान ॥

तू ही हर गुल में तू ही बुलबुल में तू डारन के हर पातन में ।
तू ही हर दिल में मूर्ति महान बना मन मंदिर आलीशान ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तूं ने राजा रंक बनाये तूं ने भिक्षुक राज बैठाये ।
तेरी लीला ऐसी महान बना मन मंदिर आलीशान ॥
झूठे जग की झूठी माया मूरख इस में क्यों भरमाया ।
कर कुछ जीवन का कल्याण बना मन मंदिर आलीशान ॥

ध्याओ ध्याओ नाम प्रभु का

ध्याओ ध्याओ नाम प्रभू का ।
तारनहार ओ वीरजी धीरजी ॥
शंका इन्द्र जब मन में लाया ।
एक अंगूठे से मेरू हिलाया ॥
तब इन्द्र से लेकर देवी देव तक ॥
सब मन आई धीरजी वीरजी ॥
कीले जब कानों में गाडे ।
खीर पकाई जब चरणों पर ग्वाले ॥
तब हिले नहीं वो ध्यान से अपने ॥
पर्वत सम गंभीरजी धीरजी वीरजी ॥
चन्दनबाला के कर्म खपाये ।
शुभ गति अधिकारी पहुंचाये ॥
चरण से देकर धीरजी वीरजी ॥
तारनहारजी ओ वीरजी धीरजी ॥
कर जोडी देव कहे तारोजी स्वामी ।
तीनों भवन के अन्तर्यामी ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सहो न जाती मुझ से भारी ॥
जनम मरणकी पीडजी वीरजी धीरजी ॥

आरती

जय अन्तर्यामी स्वामी

जय अन्तर्यामी स्वामी जय अन्तर्यामी ।
सुखकारी दुखहारी त्रिभुवन के स्वामी ॥
नाथ निरञ्जन भवदुख भंजन सन्तन आधारा ॥
पाप निकन्दन भविजन सम्पति दातारा ॥
करुणासिन्धु दयालु दयानिधि जय२ गुणधारी ॥
वांछित श्री जिन सब जन सुखकारी ॥
ज्ञानप्रकाशी शिवपुरवासी अविनाशी अविकार ॥
अलख अगोचर शिवमय शिवरमणी भरतार ॥
विमल कृतारक कलिमलधारक तुमहो दीनदयाल ॥
जय जय कारक तारक षट जीवन रक्षपाल ॥
न्यामत गुण गावें कर्म नशाय चरण सिर नावें ॥
पुनि पुनि अरज सुणिये शिव कमला पावें ॥

जय जय श्रीजिनराज

जय जय श्री जिनराज आज मिलियो मुझ स्वामी ॥
अविनाशी अकलंक रूप जग अन्तर्यामी ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रूपा रूपी धर्म देव आतम आरामी ।
चिदानन्द चेतन अचिन्त्य शिवलीला पामी ॥
सिद्ध बुद्ध तुम वन्दना सकल सिद्ध वर बुद्ध ।
रमो प्रभु ध्याने करी प्रकटे आतम रिद्ध ॥
काल बहु थावर गम्यो भमियो भव माही ।
विकलेन्द्रिय माही वस्यो स्थिरता नहीं क्याही ॥
तिरि पंचेंद्रिय मांहि देव कर्मे हुं आव्यो ।
करी कुकर्म नरके गयो प्रभु दर्शन नहीं पायो ॥
एम अनन्त काले करिये पाम्यो नर अवतार ।
हवे जगतारण तुंही मलियो भव जल पार उतार ॥

कृषक सम्वाद

बेटा—रे दादा पट्टी वरतणो लाइ दे रे नी रहूंगा
ढेकरिया में हाकम वण जाऊं रे ।
बाप—बेटा कदी नी भणवा मेलूं रे खेती वगडे
आपणी मूं निर्धन वण जाऊं रे ॥
बेटा—नी ताडूंगा मोडला रे नी करूंगा पाणत
तावडारे माऱ्यो दादा कालो पड जाऊरे ।
बाप—आपण तो करसाण वणयां हां खेतीको छे धंधो
हल कुरी ने जोतूंरे बेटा बडो पडेगो फन्दो
रे बेटा कदी नी भणवा मेलूं रे ॥
बेटा—रोज ताडूं मोडला रे कांदा रोटी खाऊं
जो दादा हाकम वण जाऊ नत उड सीरो खाऊं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रे दादा प्रट्टी वरतणो लाई रे नी रहूंगा ।
ढेकरिया में, हाकम वण जाऊं रे ॥

संवाद माता धारणी

पुत्र—आज्ञा देदे मैया प्रेम से संयम लेऊं मैं धार-
माता धारणी ॥
माता—संयम मत ले रे हम को छोडके संयम है खांडा धार-
बेटा मान जा ॥
पुत्र—गुरुदेव का ज्ञान श्रवण कर छूटा मोह विकार-
माता धारणी ॥
माता—सर्दी गर्मी सहेगा कैसे तन है अति सुकुमार-
बेटा मान जा ॥
पुत्र—चाहे जितना लाड लडाओ तन होवेगा छार-
माता धारणी ॥
माता—अन्धे की लाठी है लाला तू है पालनहार-
बेटा मान जा ॥
पुत्र—भाग्य लिखा सब होवेगा माता कोई न पालनहार-
माता धारणी ॥
माता—तुझ बिन प्राण रहेंगे कैसे तू जीवन आधार-
बेटा मान जा ॥
पुत्र—झूठा है सब नाता माता मतलब का संसार-
माता धारणी ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

माता—बहुओं कैसे दिन काटेंगी उन की ओर निहार--
बेटा मान जा ॥
पुत्र—मर जावें तब कौन सँभाले रह जाये आँसू ढार-
माता धारणी ॥
माता-दुनियां का सुख देख के बेटा लीजो संजमधार-
बेटा मान जा ॥
पुत्र—पल भर की कुछ खबर नहीं है कल का कौन विचार-
माता धारणी ॥
माता—भीख माँगना कठिन हैं लाला फिरना घर २ द्वार-
बेटा मान जा ॥
पुत्र-लाज न आयगी समझूंगा मैं घर सारा संसार-
माता धारणी ॥

(मां बेटा का पार्ट महेन्द्र और मनोहर करते हैं)

विद्या संवाद

महेन्द्र- मत विद्या पढो मत विद्या पढो ।
पढ कर के विद्या क्यों दुख में पडो ॥
भूपेन्द्र-- आओ विद्या पढें आओ विद्या पढें ।
पढ कर के विद्या को ऊंचे चढें ॥
महेन्द्र-- गलियों में जूते सिटकाते फिरते विद्यावान ।
बीस तीस का वेतन पाकर खोते दीनईमान ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भूपेन्द्र-- अधकचरे मूरख ही फिरते फिरें न विद्यावान।
आलिम दौलत कहते रहते रखते दीन ईमान॥

महेन्द्र- विद्या पढने वाले होते लुच्चे और लबार।
करन धरन को एक नहीं पर बातें करे हजार।

भूपेन्द्र- पूरे पक्के अपने प्रण के होते हैं विद्वान्।
पूरा करके ही दिखलाते जो कुछ कहे जबान॥

महेन्द्र- आलिम फाजिल लाखों फिरते टुकडे के लाचार।
धनियों आगे शीश झुकाते करते जी जी कार॥

भूपेन्द्र- विद्यावान कभी नहीं होते किसी तरह लाचार।
आलिम की नित सेवा करते बडे बडे सरदार॥

महेन्द्र- मित्र ठीक है तेरा कहना करता हूं स्वीकार।
'अमर' पढेगा विद्या को अब करके भिन्न संसार॥

जुआ संवाद

भूपेन्द्र-जरा खेलो जुआ २ पल में फकीर अमीर हुआ।
मनोहर- मत खेलो जुआ २ छन में अमीर फकीर हुआ॥
भूपेन्द्र- जुआ जो खेला दुर्योधन ने जीती पांडव नार।
दौलत का कुछ पार न आया बना परनारी भरतार॥
मनोहर- जुआ जो खेला राजा नलने दुख का बना अवतार।
जंगल २ भटका फिरता बनी रानी बेजार॥ मत॥
भूपेन्द्र- किस्मत में है खाक तुम्हारे महनत सुबह से शाम।
रुपया एक-दो तुमने पाया हमारे तो है खूब इन्तजाम॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मनोहर--छुपके छुपके जुआ जो खेले पकड ले सरकार।
जूत जमावे इज्जत जावे घर में होवे तकरार ॥ मत ॥
भूपेन्द्र- जिधर जावे मौज उडावे खावे मस्त हो माल।
कमाई वगैरह कभी न करते चले अमीरी चाल ॥ जरा ॥
मनोहर- जिधर जावे धक्के खावे करे न कोई विश्वास।
पैसे गये बाबांजी बन गये हुए ठनठनगोपाल ॥ मत ॥
भुपेन्द्र- फैशन मेरी देख निराली बना हुआ हूं बाबू।
बिस्कुट खाऊ सोडा पिऊ पान हमेशा चाबूं ॥ जरा ॥
मनोहर- अरे इज्जत तेरी चोरों जैसी कोई न करे विश्वास।
लुच्चे लफंगे भंगेडू और दोस्त तेरे बदमाश ॥ मत ॥
भुपेन्द्र- नसीहत मानूं आज तुम्हारी लानत इस जुवारी पर।
सुनने वाले आंखे खोलो धिक्कार मुझे अविचारी पर ॥

(दोनों)

सट्टा सौदा माल मंसूबा और शरत इकरारी पर।
लानत लफंगे नशेबाज और परनारी भरतारों पर ॥
बीडी सिगरेट चुरुट गांजा औ चिलमें खूब करारी पर।
निन्दाखोरों दगाबाजों और कन्या बेचनहारों पर ॥
झूठा दावा दूणा ले कर गरीब सतावन हारों पर।
कहे 'फतह' सुनो सब सज्जन लानत इन मक्कारों पर ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संवाद

भूपेन्द्र- चालो बन्धु आइये जिनवरजी गुण गाइये ।
आनन्द पाइये भव दुख मे बेडा पार है ॥

मनोहर- बात तुम्हारी सच्ची पण कई कई बातां कच्ची ।
हम को जच्ची दमडा बडा कलदार है ॥

भूपेन्द्र- दमडा देखो नयन परेखो नरक मांहि ले जावे ।
प्रभु भक्ति बिन जीव कभी मुक्ति नहीं पावे ॥
मेरे बंधु पूजा परमाधार है ॥

मनोहर- बिना द्रव्य दुनिया में देखो कछु काम नहीं होवे ।
धर्म कर्म करके सहु जगमें अपनी मिलकत खोवे ॥
मेरे बंधु दमडा बडा कलदार है ॥

भूपेन्द्र- दमडा दमडा करे दीवाना फिरे जगत में ज्यादा ।
दमडे कारण करे जो अनरथ तजे धर्म मर्यादा ॥
मेरे बंधु प्रभु पूजा परमाधार हैं ।

मनोहर- प्रभु पूजा करने जावे तो व्यापार सघलो खोवे ।
फुरसत पलभर मरने की नहीं धर्मकर्म कुण जोवे ।
मेरे बंधु दमडा बडा कलदार है ॥

भूपेन्द्र- पुण्य कमाई करी पूरव में इस भव पाया दमडा ।
इस भव में कछु नहीं करेगा तो जवाब लेगा जमडा ।
मेरे बंधु प्रभु पूजा परमाधार है ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मनोहर- लाडी वाडी गाडी दमडा मोटर मौज उडावे ।
खान पान गुलतान बने ऐसी इच्छा पावे ॥
मेरे बन्धु दमडा बडा कलदार है ॥

भूपेन्द्र- दास बनो नहीं दमडे के तुमलो लक्ष्मी नो लावो ।
इस दुनिया में दुर्लभ नरभव निष्फल मत गमवाओ ।
मेरे बंधु प्रभू पूजा परमाधार है ॥

(दोनों मिलकर)

समझ आई अब बात तुम्हारी जग जंजाले कच्ची ।
भव सागर तरवा दीपक ज्यू जिनपूजा है सच्ची ॥
मेरे बंधु प्रभु पूजा परमाधार है ।
सब मिल आओ जिन गुण गाओ लो लक्ष्मी नो लावो ।
चित्तौड गुरुकुल मण्डली ध्याओ अमर 'फतह' पद पावो ॥
मेरे बन्धु प्रभु पूजा परमाधार है ॥

समरो न अमरा भई

समरो न अमरा भई समरो न अमरा भई ।
सब नार हतीत थई समरो न अमरा भई ॥
माटलो लईने पाणी चाल्या माटलो लईने पाणी चाल्या ।
ठोकर लागी गई समरो न अमरा भई ॥
दुकडो लेन गांवडे चाल्या आनी खोवा गई ।
दीवो लई ने जोवा लागा दाढी बली गई ॥
समरो न अमरा भई समरो न अमरा भई ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पांच रुपया नी रेजगी लाव्या पावली खोवा गई ।
एक रुपया नी रवडी लाव्या घाही ढुली गई ॥
एम बैठी ने होरवालागा थापड लागी गई ।
एक तो मारा भाईजी दीधी दूजी दीधी बाई ॥
रामचन्द्रजी तीर चलाव्यो हरणी मरी गई ।
एम करी ने दौडवा लागा सीता हरी गई ॥
समरो न अमरा भई समरो न अमरा भई ।
सब नार हतीत थई समरो न अमरा भई ॥

पेटू प्रार्थना

हम पेटुओं की ओर भी भगवान तेरा ध्यान हो ।
हो दूर राशन की व्यवस्था प्राप्त निज पकवान हो ॥
हम मिष्ट भोजी वीर बन कर स्वादु भोजन नित करें ।
हमको हमारी स्वाद प्रेमी जीभ पर अभिमान हो ॥
हम चाहते हैं बस यही मिलता रहे सीरा पुडी ।
खीर मोहन भोग लाडू नुकतियों से मान हो ॥
होवे बडे भी साथ में अरु रायता तैयार हो ।
दिल में हमारे पेट सेवा का भरा अरमान हो ॥
होवे कचौडी की कभी जब मांग प्यारी जीभ को ।
थाल में रक्खे प्रथम ऐसा गुणी यजमान हो ॥
संसार में 'सिरमोर' हो कर पेट हम से कह सके ।
हे वीर पेटू धन्य तुम रखते सदा मम ध्यान हो ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

समय रो करतब (चेतावणी)

यो दिन ऊगे ने रात पड़े ई में सभी वर्ण वगड़े ।
कणी वगत तो हऱ्या रूंखड़ा कणी वगत में पान झड़े ॥
एक उतारू डेरा देवे ले खड़िया ने एक खड़े ॥ १ ॥
कठी उगाड्या जड्या कमाड्या कठी उगाड्या परा जड़े ।
कठी काठ री करे खाटल्यां घोड्यां तोरण कठी घड़े ॥ २ ॥
कठीक बाले रोग रींख ने कठीक आवे ज्ञान चढ़े ।
घोड़ी एक अनेक चढ़ाका चढ़ उतरे ने उतर चढ़े ।
यो तो हाट बाट रो मेलो मिल विछड़े ने विछड़ मले ।
एक जश्यो नी रेवे कोई शगत सबां ने भांजगड़े ॥ ४ ॥
कोई नवो वियो नी वेवे वठी छुपे ने अठी कढ़े ।
अठी वठी रा वठी अठी रा राई घटे ने तली बढ़े ॥ ५ ॥
जमा होय तो खरच करे ने मूल होय तो व्याज चढ़े ।
'हीरालाल' हाल में रेणो एक तोल ने दो पलड़े ॥ ६ ॥

वह विरला संसार

वह विरला संसार नेह निर्धन से पाले ।
वह विरला संसार लाभ अरु खर्च संभाले ॥
वह विरला संसार दान जो करे अदीठो ।
वह विरला संसार जीभ से बोले मीठो ॥
आपो मारे प्रभु भजे तन मन तजे विकार ।
अवगुण ऊपर गुण करे वह विरला संसार ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रावक जन तो तेने कहिये

श्रावक जन तो तैंने कहिये जे पीर पराई जाणे रे ।
पर दुःखे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे ॥
सकल लोक मां सहु ने वन्दे निन्दा न करे केनी रे ।
वाछ काछ मन निश्चल राखे धन २ जननी तेनी रे ॥
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी पर स्त्री जेने मात रे ।
जिव्हा थकी असत्य न बोले परधन नव झाले हाथ रे ॥
मोह मायापे व्या नहीं जेने दृढ वैराग्य जेना मन मां रे ।
राम नाम शूं ताली लागी सकल तीरथ तेना मनमां रे ॥
वण लोभी ने कपट रहित छे काम क्रोध निवार्या रे ।
भणे नरसैयो तेनूं दर्शन करतां कुल एकोतेर तार्या रे ॥

अब हम अमर भये

अब हम अमर भये न मरेंगे ।

या कारण मिथ्यात्व दियो तज क्यों कर देह धरेंगे ॥१॥
राग द्वेष जग बन्ध करत है इनको नाश करेंगे ॥२॥
मर्यो अनन्त काल ते प्राणी सो हम काल हरेंगे ॥३॥
देह विनाशी मैं अविनाशी अपनी गति पकरेंगे ॥४॥
नासी नासी हम थिर वासी चोखे व्है निखरेंगे ॥५॥
मर्यो अनन्त वार बिन समझे अब सुखदुख बिसरेंगे ॥६॥
आनंदघन सुन्दर अक्षर दो नहीं सुमरे सो मरेंगे ॥७॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कहूं कर जोर जोर

कहूं कर जोर जोर दिल ने मचाया शोर मेरे प्रभू आजा
आऽजा मेरे प्रभू आंजा आऽजा ॥ कहू० ॥
देह देवल के मन मन्दिर में प्रभु तुमको बैठाऊं ।
पले २ तुम्र पूजन करके अन्तर में गुण गाऊं ॥
नाच उठा मन मेरा देख दीदार तेरा दिल में समा जा—
आऽजा आ··· ॥ कहूं कर जोर जोर० ॥
मूरत तिहारी मोहनगारी देखत मैं हरषाऊं ।
प्रभू तिहारी मूरत पर मैं वारि वारि जाऊं ॥
तडप रहे हैं नयना दरश की प्यासी नयना नैनन में समाजा—
आऽजा आ··· ॥ कहूं कर जोर जोर० ॥
ताले ताले नाचूं गाऊं मन को मस्त बनाऊं ।
प्रभू तिहारे दर्शन के बिन मैं व्याकुल बन जाऊं ॥
मेरा तो मनवा डोले रोम रोम प्रभू बोले छवि दिखला जा—
आऽजा आ··· ॥ कहूं कर जोर जोर० ॥

एकत्व भावना

आये हैं अकेले और जांयगे अकेले सब,
भोगंगे अकेले दुख सुख भी अकेले ही ।
माता पिता भाई बन्धु सुत दारा परिवार,
किसी का न कोई साथी सब हैं अकेले ही ॥
'गिरिधर' छोडकर दुविधा न सोच कर,
तत्त्व ज्ञान बैठ के अकान्त में अकेले ही ।
कल्पना है नाम रूप झूठे राव रंक भूप,
अद्वितिय चिदानन्द तू तो है अकेले ही ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नित्य स्मरण

नमस्कार मन्त्र

णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहुणं। एसो पंच णमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्।

उवसग्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेई जो सया मणुओ तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मन्तो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह समत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण। ता देव ! दिज्ज बोहिं, भव भवे पास जिणचन्द ॥ ५ ॥

भक्तामर स्तोत्र

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-मुद्योतकंदलितपापतमोवितानम्। सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकल वांगमय तत्त्वबोधा दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः। स्तोत्रैर्जगतत्त्रित-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यच्चित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ बुद्ध्याविनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ !, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् । बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिम्ब-मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ? ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपिबुद्ध्या कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ? ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्त । प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य-मृगोमृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ? ॥५॥ अल्पश्रुतंश्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् । यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् । आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद-मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ता फलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापिजगतांदुरितानिहन्ति । दूरेसहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ !, भूतैर्गुणैर्भुविभवंतिमभिष्टुवन्तः । तुल्याभवन्ति भवतो ननु तेन किंवा ? भूत्याश्रितम् य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोक-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुंकइच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रि भुवनैकललामभूत! तावंतएव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां; यत्ते समानमपरं न हि रूप मस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरग-नेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम्। बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ सम्पूर्णमंडलशशांककलाकलाप शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघ-यंति। ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं कस्तान्निवारयति-संचरतो यथेष्टम्? ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशां-गनाभिर्नीतंमनागपिमनो न विकार मार्गम्? । कल्पांतकाल-मरुताचलिताचलेन किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि-गम्यो न जातु मरुता चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसिनाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासिन राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति। नांभोधरोदरनिरुद्धमहा प्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र! लोके ॥१७॥ नित्यो-दयं दलितमोहमहान्धकारं, गम्यं न राहु वदनस्य न वारि-दानाम्। विभ्राजते तवमुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्ज-गदपूर्वशशांकबिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनान्हिविवस्वता वा?, युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ! निष्पन्नशालिवन-शालिनि जीवलोके कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः? ॥ १९ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु यथा महत्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्येवरं हरिहरादयएव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथभवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्यासुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं; नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम् । योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदंति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धि बोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् । धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ ! तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय । तुभ्यं नतस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र यदिनाम गुणैरशेषै स्त्वं संश्रितोनिरवकाशतया मुनीश ! दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखमाभाति रूप ममलं भवतो नितांतम् । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिम्बं रवेरिव पयो-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

धरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् । बिंबं वियद्विलसदंशुलता-वितानं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदात-चलचामरचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् । उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार—मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शात कौम्भम ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं नव विभाति शशांककान्त मुच्चैस्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् । मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं प्रख्या-पयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥ गंभीर तार रव पूरित दि-ग्विभाग, त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः। सद्धर्मराजजयघोषण घोषकः सन खे दुन्दुभिर्ध्वनतिते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥ मंदार सुन्दर न मेरु सुपारिजात सन्तानकादि कुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा गंधोदबिन्दु शुभमन्दमरुत्प्रपाता दिव्यादिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥ ३३ ॥ शुम्भत्प्रभावलयभूरि विभा विभोस्ते, लोक-त्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ति । प्रोद्यदिवाकर निरन्तर भूरि-संख्या, दीप्त्यो जयत्यपि निशामपि सोममाजाम् ॥ ३४ ॥ स्वर्गा पवर्ग गम मार्ग विमार्गणेष्टः सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः । दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थ सर्व भाषा स्वभाव परिणामगुणै प्रयोज्यः ॥ ३५ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांति पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाभिरामौ । पादौपदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! भतः, पद्मा-नि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३६ ॥ इत्थं यथा तव विभू-तिरभूज्जिनेन्द्र ! धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य । यादृक प्रभा दिन कृतः प्रहतान्धकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नोऽपि ? ॥ ३७ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ! ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं; दृष्ट्वा-भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३८ ॥ भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्व-शोणिताक्त मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः । बद्धक्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३९ ॥ कल्पान्तकालपवनोद्धतवन्हिकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमु-त्स्फुलिंगम् । विश्वं जिघत्सुमिव सन्मुखमापतन्तं, त्वन्नामकी-र्तनजलं शमयत्यशेषं ॥ ४० ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तं । आक्रामति क्रमयुगेन निरस्त-शंक स्त्वन्नामनागदमनी हृदियस्य पुन्सः ॥ ४१ ॥ वल्गत्तुरंग गजगर्जितभीमनाद, माजौ बलं बलवतामपिभूपतीनाम् ! उद्य-द्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तमइवाशुभिदामुपैति ॥ ४२ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह वेगावतारतरणातुर-योधभीमे । युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा स्त्वपादपंकजवना श्रयिणो लभन्ते ॥ ४३ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ । रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद व्रजन्ति ॥ ४४ ॥ उद्भूत-भीषणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः त्वत्पादपंकजरजोऽमृतदग्धिदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्य-रूपाः ॥ ४५ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगड-कोटिनिघृष्टजंघाः । त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधभयाभयाभवंति ॥ ४६ ॥ मत्तद्विपेन्द्रमृगराज-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दवानलाहि संग्रामवारिधिमहोदरबन्दनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति भयंभियेव, यस्यावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥ स्तोत्रस्रजंतवजिनेन्द्रगुणैर्निबद्धां भक्त्यामयारुचिरवर्णविचित्र पुष्पाम् । धत्ते जनो य इह कण्ठ गता मजस्र तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥ ॐ आदिनाथ मरुहन्त अर्हत अर्हन् श्लोगस्य नाभिकुण्डल चन्द्रजस्स प्रतापो । इक्ष्वाग्वंश रिपुमर्दन श्री विभोगी, छायासुत सकल विस्तर यारूहन्त ॥ ४६ ॥ कष्ट प्रणग्न दुरिताप समापनाहि, अम्भोनिधो सुखतारक विघ्नहर्तान् दुःख विनाश भय भग्नते लोह कष्टं, तालोद्घात भयभीति समुत्कलामै ॥ ५० ॥ श्रीमान् तुंगयन् सूरिकृत बीजमन्त्रो, यंत्र स्तुति किरण पुंज सुपादपीठौ । भक्त्यौभरौ हृदय पूरित विशालगात्रोः क्रोधादि वारक समावनत्वं जिनान्द्री ॥ ५१ ॥ त्वं विश्वनाथ पुरुषोत्तम वीतराग, त्वं विश्वनाथ कथिता शिव सिद्धिमार्गः । त्वौद्धाद्भञ्जन व प्रखिल दुःख टालनः, त्वं भूमि लक्ष समुदयात् धर्म्मपालनः ॥ ५२ ॥

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ की स्तुति

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं, किं चन्द्ररोचिर्मयम्, किं लावण्य मयं महामणि मयं कारुण्य केलिमयं । विश्वानन्द मयं महोदय मयं शोभामयं चिन्मयम्, शुक्ल ध्यान मयं वपुर्जिनपते र्भूयाद्भवालम्बनं ॥ १ ॥ पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन्, दिक्चक्रं क्रमयन सुरासुरनर श्रेणीं च विस्मापयन् । ब्रह्माण्डं

सुखथनजलानि जलधेः फेनोत्थलाल्लोलयन्, श्री चिन्तामणि पार्श्व सम्भव यशो हंसश्चिरं राजते ॥ २ ॥ पुण्यानां विपणिस्त मोदिनमणिः कामेभ कुंभे श्रृणिः मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिः प्रकाशारिणिः । दाने देव मणि र्नतोत्तम जन श्रेणिः कृपासारिणी, विश्वानन्द सुधा धृणिभवभिदे पार्श्व चिन्तामणिः ॥ ३ ॥ श्री चिन्तामणि पार्श्व विश्वजनता संजीवनस्त्वं मया । दृष्टस्तात ततः श्रियः समभवन्नाश क्रमाचक्रिणाम्, मुक्ति क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनो वांछितम् दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिन भयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४ ॥ यस्य प्रौढ तमः प्रताप तपनः प्रोद्यामधामा जगः, जंजालः कलिकाल केलिदलनो मोहान्धविध्वंसकः, नित्योद्योतपदं समस्तकमला-केलिगृहं राजते, स श्री पार्श्व जिनो जिन हित कृते चिन्तामणिपातुमाम् ॥ ५ ॥ विश्व व्यापितमो हिनस्तितरणिर्बालोपि-कल्पांकुरो । दारिद्राणि गजावलिं हरिशिशु काष्ठानिवन्हेः कणः । पीयूषस्य लवोपि रोग निवहं यद्वत्तथा ते विभोः, मूर्तिः स्फूर्तिः मतिसती त्रिजगति कष्टानि हर्तुं क्षमा ॥ ६ ॥ श्रीचिन्तामणिमन्त्रमोंकृति युतं ह्रींकारसाराश्रितं, श्रीमर्हन्नामिउणपाश कलितं त्रैलोक्य वश्यावहम् । द्वैधाभूत विषापहं विषहरं श्रेयः प्रभावाश्रयं, सोल्लासं वसहांकितं जिनफुल्लिंगा नन्दनं देहिनाम् ॥ ७ ॥ ह्रीं श्रींकार वरं न मोक्षपरं ध्यायंति ये योगिनो । हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिन्तामणि संज्ञकम् । भाले वामभुजे च नाभिकारयोर्भूयोभुजे दक्षिणे, पश्चादष्ट दलेषुतेशिव पदं द्वित्रै-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भवैर्यन्त्यऽहो ॥ ८ ॥ नो रोगा नैव शोका न कलह कलना नारि मारि प्रचारा, नैव्याधिर्नासमाधिर्न च दरदुरिते दुष्ट दारिद्रतानो नो शाकिन्यो ग्रहानो न हरिकरिगणा व्याल वैताल जाला, जायन्ते पार्श्व चिन्तामणि मति वशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम् ॥ ९ ॥ गीर्वाण द्रुम धेनु कुम्भमणयस्तस्यांकणे रंगिणो, देवा दानव मानवा सविनयं तस्मै हितं ध्यायिनः । लक्ष्मीस्तस्य वशा वशेव गुणीनां ब्रह्मांड संस्थायिनी, श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ मनिशं संस्तौतियो ध्यायते ॥ १० ॥ इति जिनपति पार्श्वः, पार्श्व पार्श्वाख्य यक्षः प्रदलित दुरितौघः प्रीणितः प्राणिसार्थः । त्रिभुवन जन वांछा दान चिन्तामणिकः, शिवपद दरु बीजं बोधि बीजं ददातुः ॥ ११ ॥

श्री जैन धर्मशाला स्टेशन चित्तौड में लिखे हुए उपदेश प्रद दोहे व श्लोक

गौ धन गज धन वाजि धन और रतन धन खान ।
जब आवे सन्तोष धन सब धन धूलि समान ॥
काम क्रोध मद लोभ की जब लग घट में खान ।
कहा मूरख कहा पंडिता दोनों एक समान ॥
सांच बराबर तप नहीं झूंठ बराबर पाप ।
जा के हिरदै सांच है ता के हिरदै आप ॥
रात गंवाई सोय कर दिवस गँवायो खाय ।
हीरा जनम अमोल था कौडी बदलै जाय ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मन बढता मनशा बढे मन बढ धन बढ जाय ।
धन बढता धर्म बढे बढत बढत बढ जाय ॥
मन घटतां मनशा घटे मन घट धन घट जांय ।
धन घठतां धर्म घटे घटत घटत घट जाय ॥
धर्म किये धन ना घटे नदी घटे नहीं नीर ।
अपनी आंखों देखिये कह गये दास कबीर ॥
शाँति सम तप और नहीं सुख सन्तोष समान ।
नहीं तृष्णा सम व्याधि है धर्म दया समान ॥

है बहारेबाग दुनिया चन्द रोज देखलो इसका तमाशा चन्दरोज।
ये मुसाफिर कूच का सामान कर इस जहां में है बसेरा चन्द रोज ॥

क्यों सताते हो दिले बे जुर्म को ।
जालिमों है यह जमाना चन्द रोज ॥
याद कर तू ये नजीर कब्रों के रोज ।
जिन्दगी का है भरोसा चन्द रोज ॥

बांधी हथेली राखता जीवो जगत मां आवता ।
ने खाली हाथे आ जगत थी जीव सौ चाल्या जता ॥
यौवन फना जीवन फना जर ने जगत पण छे फना ।
परलोक मां परिणाम फलशे पुण्य ना ने पाप ना ॥
कहा कृपण धनवान ते खाय न खावा देत ।
बे उदार निर्धन भले रोटी बांटे देत ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कहा भरोसो देह को विनसि जाइ छिन मांहि।
श्वास श्वास सुमिरन करो और जतन कछु नाहिं॥
अरब खरब लौं द्रव्य है उदय अस्त लौं राज।
तुलसी जो निज मरण है आवे केहि काज॥
सत्य वचन अधीनता परतिय मात समान।
इतने में प्रभू ना मिले तुलसीदास जमान॥

प्रभू महावीर का उपदेश तथा जैनों के पांच महा व्रत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह किसी जीव को न मारो झूठ, मत बोलो, चोरी न करो, व्यभिचार न करो अधिक वस्तु संग्रह न करो॥ १॥ सभी जीवों पर समान भाव रक्खो, छूतछात न करो, किसी की निन्दा न करो, अपने दोष न छिपाओ, सब पर दया करो, दुख में सहायता करो, आलस्य न करो, जुआ सट्टा न खेलो॥ २॥ जीव कर्मानुसार सुख भोगता है, एवं धनी, निरोगी, यशश्वी वैभवशाली होता है परन्तु पाप का उदय होते ही यह सब सुख नष्ट हो जाते हैं इसमें ईश्वर का दोष नहीं है॥ ३॥ मनुष्य जन्म व्यर्थ न खोओ वरना पछताओगे, देव, नरक या पशु पक्षी की योनि में साधना न होगी मौत क्षण २ में पास आ रही है, अरे चेतो चेतो धर्म वृक्ष के सहारे मोक्ष महल में जा पहुंचो॥ ४॥ महावीर प्रभू राजा के पुत्र थे, सुखी परिवार के थे परन्तु संसार के दुखों को दूर करने के

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विचार से सर्व त्यागी बन अनेक कष्ट परिषह सहन कर केवलज्ञानी हो जीवों को तार कर मोक्षगामी हुवे ॥ ५ ॥ जीव अजीव के भेद को समझो, अपने स्वार्थ के लिये स्वाद के लिये जल थल के मूक जीवों को अजीव न गिनो उन्हें मार कर न खाओ, पानी छान कर पीयो, रात को न खाओ, संसार सराय है चन्द रोज के लिये यहां लम्बे पैर मत फैलाओ ॥ ६ ॥ समय अमूल्य धन है व्यर्थ न खोओ फिर नहीं आयगा बेकार मत रहो, कु-विचार आयेंगे, सत्कार्य में संलग्न रहो, बिना काम बिना पूछे बिना बुलाये कहीं न जाओ अपमान होगा, ईमानदारी आत्म विश्वास पूर्ण ज्ञानदक्षता में सफलता है ॥ ७ ॥ नीची दृष्टि से चलो छोटे २ जीव जन्तु दब न जाय तथा ठोकर न खाओ, कडवी बात मुंह से न बोलो एवं चुगली न खाओ, अति परिचय न बढाओ झगडा होगा चञ्चल मन को, पांचों इन्द्रियों को तप द्वारा वश में रखो ॥८॥ ब्रह्मचर्य में अनन्त शक्ति है इसका पालन करने वाला वसति (गांव) राग कथा, आराम आसन (शैया) अंगोपांग निरीक्षण, परदे की ओट से काम कथा श्रवण पूर्व भोग चिन्तन मधुर भोजन अति मात्रा आहार (लघु शंका अधिक हो) शृंगार विभूषण का त्याग करे ॥ ९ ॥ रात्रि को सोने से पहिले आत्म निरीक्षण करो, राग द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ रहित हो पापों का प्राय-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रित करो। सब जीवों से क्षमा मांग कर प्रभु का स्मरण कर निर्मल शुद्ध हो जाओ। सुबह जिन्दा रहो या न रहो इसका क्या भरोसा?

आशा नाम नदी मनोरथजला तृष्णा तरंगाकुला।
राग ग्राहवती वितर्क विहगा धैर्य द्रुम ध्वंसिनी॥
मोहावर्त सुदुस्तरातिगहना प्रोत्तुंग चिन्ता तटी।
तस्याः पारगता विशुद्ध मनसो नंदंति योगीश्वराः॥
हस्तौ दान विवर्जितौ श्रुति पदौ सारस्वत द्रोहिणौ।
नेत्रे साधु विलोकनेन रहिते पादौ न तीर्थ गतौ॥
अन्यायार्जित वित्त पूर्ण मुदरं गर्वेण तुंगं शिरौ।
रे रे जंबुक मुञ्च मुञ्च सहसा नीचं सुनिंद्यं वपुः॥
रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं, भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकज श्रीः। इत्थंविचिन्त्ययति कोषगते द्विरेफे, हा हन्त हन्त नलिनिं गज उज्जहार॥
धैर्य यस्य पिता क्षमा च जननी शांतिश्चिरं गेहिनी
सत्यं सनुरयं दया च भगिनी भ्राता मन संयमः।
शय्याभूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनम्॥
येते यस्य कुटुम्बिनो वद सखे कस्माद्भयं योगिनः॥

श्री रत्नाकर पच्चीसी

मंदिर छो मुक्ति तणा मांगल्य क्रीडा ना प्रभू।
ने इन्द्र नर ने देवना सेवा करे तारी प्रभू॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सर्वज्ञ छो स्वामी वली सिरदार अतिशय सर्व ना ।
घणु जीवतुं घणु जीवतुं भंडार ज्ञान कला तणा ॥
त्रण जगत ना आधार ने अवतार है करुणा तणा ।
वली वैद्य है दुर्वार आ संसार ना दुःखो तणा ॥
वितराग वल्लभ विश्व ना तुझ पास अरजी उच्चरूं ।
जाणो छता पण कही अने या हृदय हूं खाली करूं ॥
शूं बालको मां बाप पासे बालक्रीडा नव करे ।
ने मुक्ख मां थी जेम आवे तेम शूं नव उच्चरे ॥
तेमज तमारी पास तारक आज भोला भाव थी ।
जेवुं बन्यू तेवुं कहूं तेमां कशूं खोटूं नथी ॥
मैं दान तो दीधुं नहीं ने शील पण पाल्युं नहीं ।
तप थी दमी काया नहीं शुभ भाव पण भाव्युं नहीं ॥
प चार भेदे धर्म नां थी कांई पण प्रभु मैं नव कर्युं ।
म्हारूं भ्रमण भवसागरे निष्फल गयुं निष्फल गयुं ॥
हूं क्रोध अग्नि थी बल्यो वली लोभ सर्प डस्यो मने ।
गल्यो मान रुपी अजगरे हूं केम करि ध्याऊं तने ॥
मन मारूं माया जाल मां मोहन सदा मुञ्झाय छे ।
चडी चार चोरो हाथ मां चेतन घणो चगदाय छे ॥
मैं परभवे के आ भवे पण हित कांई कर्युं नहीं ।
ते थी करी संसार मां सुख अल्प पण पाम्युं नहीं ॥
जन्मो अमारा जिनजी भव पूर्ण करवा ने थया ।
आवेल बाजी हाथ मां अज्ञान थी हारी गया ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अमृत झरे तुझ मुख रूपी चन्द्र थी तो पण प्रभु ।
भींजाय नहीं मुझ मन अरे रे ! शूं करूं हूं तो विभु ॥
पत्थर थकी पण कठण मारूं मन खरे क्यांथी द्रवे ।
मरकट समा आ मन थकी हूं तो प्रभू हार्यो हवे ।
भमता महा भवसायरे पाम्यो पसावे आपना ।
जे ज्ञान दर्शन चरण रुपी रत्नत्रय दुष्कर घणा ॥
ते पण गया परमाद ना वश थी प्रभु कहूं छू खरूं ।
कोनी कने किरतार आ पोकार हूं जई ने करूं ।
ठगवा विभु आ विश्व ने वैराग्य ना रंगो धर्या ॥
ने धर्म ना उपदेश रंजन लोक ने करवा कर्या ।
विद्या भण्यो हूं वाद माटे केटली कथनी कहूं ।
साधु थई ने बाहर थी दांभिक अन्दर थी रहूं ॥
में मुख ने मेलू कर्युं दोषो परायां गाई ने ।
ने नेत्र ने निंदित कर्या परनारी मां लपटाई ने ॥
वलि चित्त ने दोषित कर्युं चिन्ती न ठारू परतणू ।
हे नाथ मारूं शूं थशे ? चालाक थई चूक्यो घणूं ॥
करे काल जाणे कतल पींडा काम नी बीहामणी ।
ए विषय मां बनी अन्ध हूं विडम्बना पाम्यो घणा ॥
ते पण प्रकाश्युं आज लावी लाज आप तणी कने ।
जाणो सहु ते थी कहूं कर माफ मारा वांक ने ॥
नवकार मंत्र विनाश कीधूं अन्य मन्त्रो जाणी ने ।
कुशास्त्र ना वाक्यो वदे हणी आगमो नी वाणी ने ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कुदेव नी संगत थकी करमो नकामा आचर्या ।
मति भ्रम थकी रत्नो गुमाबी काच कटका मैं ग्रह्या ॥
आवेल दृष्टि मार्ग मां मूकी महावीर आप ने ।
मैं मूढ थो ए हृदय मां ध्याया मदन ना चाप ने ॥
नेत्र बाणो ने पयोधर नाभि ने सुन्दर कटि ।
शणगार सुन्दरिओ तणा कुटकेल थई जोया अति ॥
ते श्रुत रूप समुद्र मां धोयां छतां जातो नथी ।
तेनुं कहो कारण तमे बचूं केम हुं आं पाप थी ॥
सुन्दर नथी आ शरीर के समुदाय गुण ताणो नथी ।
उत्तम विलास कला तणो देदिप्यमान प्रभा नथी ।
प्रभुता नथी पण तो प्रभु अभिमान थी अक्कड फरूं ॥
चोपाट चार गति तणी संसार मां खेल्या करूं ॥
आयुष्य घटतुं जाय तो पण पाप बुद्धि नव घटे ।
आशा जीवन नी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे ॥
औषध विषे करूं यत्न पण हुं धर्म ने तो नव गणूं ।
बनी मोह मां मस्तान हुं पाया विना ना घरचणूं ॥
आत्मा नथी परभव नथी वली पुण्य पाप कशूं नथी ।
मिथ्यात्व नी कटु वाणि में धरी कान पीधी स्वाद थी ॥
रवि सम हता ज्ञाने करी प्रभु आप श्री तो पण अरे ।
दीवो लई कूवे पडयो धिक्कार छे सुझने खरे ॥
मैं चित्त थी नहीं देव नी के पात्र नी पूजा चहीं ।
ने श्रावको के साधुओ नो धर्म पण पाल्यो नहीं ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पाम्यो प्रभू नरभव छता रण मां पड्या जेवुं थयुं ॥
धोवी तणा कुत्ता समू मम जीवन सहु पेले गयुं ॥
हुं कामधेनु कल्पतरु चिन्तामणि ना प्यार मां ।
खोटा जता भंख्यो घणुं बनी लुब्ध आ संसार मां ॥
जे प्रकट सुख देनार त्हारो धर्म ते सेव्यो नहीं ।
मुझ मूर्ख भावो ने निहाली नाथ कर करुणा कई ॥
मै भोग सारा चिन्तव्या ने रोग सम चिन्तव्या नहीं ।
आगमन इच्छ्युं धन तणू पण मृत्यु ने पिछ्युं नहीं ॥
नहीं चिन्तव्युं मैं नर्क कारागृह समी छे नारीओ ।
मधु बिंदु नी आशा महीं भय मात्र हुं भूलि गयो ॥
हुं शुद्ध आचारो वडे साधु हृदय मां नव रह्यो ।
करी काम पर उपकार ना यश पण उपार्जन नव कर्यो ॥
वली तीर्थ ना उद्धार आदि कोई कार्यो नव कर्या ।
फोगट अरे ! आ लक्ष चौरासी तणा फेरा फर्या ॥
गुरु वाणी मां वैराग्य केरो रंग लाग्यो नहीं अने ।
दुर्जन तणा वाक्यो महीं शांति मले क्यां थी मने ॥
तरूं केम हूं संसार आध्यात्म तो छे नहीं जरी ।
तूटेल तलिया नो घडो जल थी भराये केम करी ॥
मैं परभवे नथी पुण्य कीधो ने नथी फेरतो हजी ।
तो आवता भव मां कहो क्यां थी थशे पे नाथजी ॥
भूत भावी ने साम्प्रत तणो भवनाथ हुं हारी गयो ।
स्वामी त्रिशंकु जेम हुं आकाश माँ लटकी रह्यो ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथवा नकामुं आप पाशे नाथ शूं बकवुं घणू ।
हे देवता ना पूज्य ! आ चारित्र मुझ पोता तणू ॥
जाणो स्वरूप त्रण लोक ना तो माहरु शूं मात्र आ ?
ज्यां क्रोड नो हिसाब नाहि त्यां पाई नो वात क्यां ॥
त्हारा थी न समर्थ अन्य दीन नो उद्धारनारो प्रभू ।
म्हारा थी नहीं अन्य पात्र जगत मां जोंतां जडे हे विभु ॥
मुक्ति मंगल स्थान तोय मुझने इच्छा लक्ष्मी तणी ।
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाये घणी ॥

अरे मन छन में ही उठ जाणो

रे मन छन ही में उठ जाणो ।
ई रो नी है ठोड ठिकाणो अरे मन छन ही में उठ जाणो ॥
साथे कई न लायो पे'ली नी साथे अब आणो ।
वी वी आय मलेगा आगे जी जी कर्म कमाणो ॥ १ ॥
सौ सौ जतन करे ई तन रा आखर नी आपांणो ।
करणो व्हे सो कर ले प्राणी पछे पडे पछताणो ॥ २ ॥
दो दिन रा जीवा रे खातर क्यूं अतरो अैंठाणो ।
हाथां में तो कई न आयो वातां में बहकाणो ॥ ३ ॥
कणी सीम पर गाम बसावे कणी नीम कमठाणो ।
ई तो पवन पुरुष रा मेला चातुर भेद पिछाणो ॥ ४ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यौवन धन थिर नहीं रहना रे ।

प्रात समय जो नजरे आवे मध्य दिने नहीं दीसे ।
जो मध्यान्हे सो नहीं राते त्युं विरथा मन हींसे ॥
यौवन धन थिर नहीं ॥ १ ॥

पवन झकोरे बादल विनसे त्यूं शरीर तुम नाशे
लक्ष्मी जल तरंग वत चपला क्युं बांधे मन आशे ॥
यौवन धन थिर नहीं ॥ २ ॥

वल्लभ संग सुपन सी माया इन में राग ही कैसा ।
छिन में उडे अर्क तूल ज्यूं यौवन जग में ऐसा ॥
यौवन धन थिर नहीं ॥ ३ ॥

चक्री हरी पुरंदर राजे मदमाते रस मोहे ।
कौन देश में मरी पहुंने ताकी खबर न कोहे ॥
यौवन धन थिर नहीं ॥ ४ ॥

जग माया में नहीं लोभावे आतमराम सयाने ।
अजर अमर तू सदा नित्यहै जिनधुनी यह सुनी काने
यौवन धन थिर नहीं रहना रे ॥ ५ ॥

गरज के यार हैं यहां सब जहाँ में कौन किसका है ।
न बेटे साथ जाते हैं न पोते साथ देते हैं ।
जहां से कूच ठहरा जब जहां में कौन किसका है ॥
जिन्हें तू यार समझा है वे हैं ऐयार ऐ गाफिल ।
कोई किसका हुआ यां सब जहां में कौन किसका है ॥
नहीं दुनिया झमेला है मचा जादू सा मैला है ।
तमाशाई है यहां हम सब जहां में कौन किसका है ॥

प्रेषक—भंवरलाल दीपचन्दजी महात्मा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्री केशरियाजी जैन गुरुकुल

चित्तौडगढ (राजस्थान)

हेड आफिस–श्री गौडीजी महाराज जैन मंदिर १२ पायधुनी बंबई३

प्रमुख–सेठ मोहोलाल मगनलाल बंबई

उपप्रमुख–सेठ धीरजलाल जीवाभाई बंबई

स्थानीय प्रमुख–श्री मदनसिंहजी कोठारी उदयपुर

ऑनरेरी सेक्रेट्रीज–श्री शांतिलाल मगनलाल शाह बंबई

श्री नटवरलाल नेमचन्द शाह बंबई

इस आदर्श संस्था की स्थापना वीर सं० २००३ चैत्र सुद १३ के दिन की गई। यहां हाई स्कूल में मेट्रिक तक शिक्षा दिलाई जाती है, धार्मिक, नैतिक व शारीरिक शिक्षा तथा भोजनादि की व्यवस्था संस्था करती है जिसका वार्षिक व्यय १२०००) है जिसे बंबई की कमेटी पूरा करती है ।

शहर में किराये का मकान असुविधाजनक होने से निजी मकान स्टेशन पर जैन धर्मशाला के पास बनाने की योजना है अतः कोट खिंचा जा चुका है। आपसे अनुरोध है कि इस पिछडे हुए प्रांत में स्थापित इस विद्यामंदिर को खुले दिल से दान देकर अक्षय पुण्य के भागी बनें ।

जैन तीर्थ तथा धर्मशाला चित्तौडगढ

स्टेशन से ३ मील किले पर अति प्राचीन जैन मंदिर हैं जिनका जीर्णोद्धार व प्रतिष्ठा सेठ भगुभाई चूनीलालजी अहमदाबाद निवासी के प्रयत्न से हुई। स्टेशन तथा किले पर जैन धर्मशाला में बर्तन बिस्तर आदि की पूरी व्यवस्था है ।

—फतहचन्द महात्मा

माधवलाल डांगी द्वारा

वर्धमान प्रिंटिंग प्रेस, निम्बाहेडा (राजस्थान) में मुद्रित

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com